1.3VIIP2
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान राम और रामभक्त

: लेखक :

राम 'पथिक'
मानव सेवा आश्रम, छुटमल पुर
रुड़की रोड (सहारनपुर)
उत्तर प्रदेश

संस्कर्ता :

प्रा. भद्रसेन, वेद-दर्शनाचार्य
डाक. साधु आश्रम (होशियारपुर)–146 021

प्रकाशक :

निष्काम सेवा वैदिक ट्रस्ट

मानव सेवा आश्रम, छुटमल पुर
पिन. : 247 662

द्वितीय संस्करण 2000 मूल्य : तीन रुपये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ? कहां

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दो शब्द	ii	साधु भरत	31
मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम	1	वीर हनुमान	31
नाम और नामी	2	निर्भीक अंगद	32
प्रेरणास्रोत श्रीराम	5	स्वामी श्रद्धानन्द	33
पुरुषोत्तम श्रीराम	9	महात्मा गान्धी	35
रावण की दृष्टि में राम	12	महात्मा हंसराज	36
राम के भक्तों में राम	14	स्वामी रामतीर्थ	38
देशी और विदेशी फूल	15	श्री लालबहादुर शास्त्री	38
भक्ति और भक्त	17	रामकथा	39
प्रभुभक्त दयानन्द	20	रामकथा का प्रभाव	40
सत्यार्थप्रकाश में रामकथा	21	कुछ प्रश्न-उत्तर	41
आदिकवि महर्षि वाल्मीकि	22	राम महिमा	43
गोस्वामी तुलसीदास	22	महान त्यागी उर्मिला	46
महारानी सीता	26	रामायण और हम	48
यतिवर श्री लक्ष्मण	30	जय-जयकार	49

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान श्री राम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

रोशनी चांद से होती है, सितारों से नहीं।
सब कुछ कर सकता है भगवान, इन्सान नहीं॥

सर्वशक्तिमान परमात्मा के स्मरण के साथ, प्रभु भक्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के पवित्र चरणों में राम के प्यारे राम की यह तुच्छ भेंट।

महापुरुषों के महान जीवन मानव समाज की जीवन यात्रा में पथप्रदर्शन का कार्य करते हैं। महापुरुषों के आदर्श कार्य तथा विचार पतितों को भी ज्योति प्रदान करके सुपथ के पथिक बनाते हैं। क्योंकि महान आत्माओं के जीवन ज्योति केन्द्र (लाईट हाऊस) की तरह अन्धेरे को दूर करके प्रकाश देते हैं। सन्तों की आदर्श दिनचर्या तथा आदर्श कार्यों से प्रत्येक को प्रेरणा, उत्साह मिलता है।

ईशभक्ति और धर्म का व्यावहारिक ज्ञान हमें महापुरुषों के जीवनों से प्राप्त होता है। तब एक विचारशील इस परिणाम पर पहुंचता है, कि महापुरुषों के महान गुणों को ग्रहण कर सांसारिक संकटों को दूर करते हुए प्राणी मात्र की सेवा, सहायता के द्वारा भी प्रभु भक्ति का सच्चा स्वरूप जाना जा सकता है। तभी मानव का कर्तव्य पूर्ण होता है और हमारी पूजा सफल होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि.........
पु०सं०.........

भगवान राम के आदर्श जीवन और उस से प्रभावित कुछ महान व्यक्तियों के संक्षिप्त जीवन तथा कार्यों को प्रेरणार्थ यहां दिया गया है। जिससे हम भी राम की भक्ति तथा राम भक्तों के महत्त्व को समझ कर अपने देश, धर्म और जाति के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाते हुए अपनी जीवनयात्रा को सफल बनायें।

भगवान राम अपने मर्यादा पालन के महान गुण के कारण ही आज विश्व में और विशेषत: आर्य जाति में पूज्य, सर्वप्रिय हैं। मर्यादापालक श्रीराम ने अपने महान तप, त्याग से जो आदर्श प्रस्तुत किए हैं, इनसे प्रभावित होकर रामभक्तों ने उन्हें भगवान का साक्षात अवतार (मूर्तरूप) मान कर उनकी अनेक प्रकार से पूजा प्रारम्भ की। जिससे मानव प्रेरणा लेकर सन्मार्ग का पथिक बने। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी समय के अनुकूल 'रामचरित मानस' की महान देन देकर हिन्दुओं को मुस्लिम प्रभाव से बचाया। आजकल रामभक्ति के नाटक, मन्दिर आदि अनेक रूप प्रचलित हैं। पर उनसे आज के मानव को अभीष्ट शान्ति, सुख, प्रेरणा प्राप्त नहीं हो रही, क्योंकि हम भगवान राम के आदर्श गुणों को केवल स्मरण ही करते हैं, उनको अपने जीवन में अपनाने का प्रयास नहीं करते। वस्तुत: सुख, शान्ति, आनन्द तो तभी मिलेगा, जब हम श्रीराम जैसे कर्म करेंगे।

इसीलिए अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैंने श्रीराम और उनके भक्तों की आदर्श कार्य शैली पर प्रकाश डालने का तुच्छ प्रयास किया है, कि जिस से हम रामभक्ति के मूलभाव को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझकर श्रद्धेय गान्धी जी के रामराज्य के स्वप्न को साकार कर सकें। श्रीराम के गुणों को अपना कर सर्वप्रथम अपने परिवार को सुखी बनायें। तदनन्तर रामभक्ति के सच्चे आनन्द से देश, जाति को कृतकृत्य करें।

रामभक्ति के वास्तविक रहस्य को समझकर ही हम अपने आपको रामभक्त कहलाने का अधिकारी बना सकते हैं। वस्तुतः तभी कोई रामभक्त कहलाने का अधिकारी है, जब वह श्रीराम के समान माता, पिता, गुरु, प्रजा आदि की सच्ची सेवा करता है और श्रीराम के समान मर्यादाओं का पालन करता है, अन्यथा वह रामभक्त कैसे ?

प्रिय रामभक्तो ! आप स्वयं अपनी रुचि, शक्ति के अनुसार श्रीराम के पवित्र कार्यों, आदर्शों पर विचार करें और उनको अपनाकर रामभक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण दें। एक सच्चे रामभक्त के अनुकूल मर्यादाओं को पालकर अपने मानव जीवन को सफल करें और रामराज्य के स्वप्न को साकार करें।

अन्त में परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है, कि—

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन पूरी होय॥

ॐ ॐ ॐ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संस्करण—

प्रिय पाठको ! 1965 में जब मैं छुटमल पुर में दुकानदार था, तब 'श्रीराम भक्ति' के नाम से इस पुस्तक का प्रथम संस्करण छपवाया था। मैंने विधिवत हिन्दी भाषा का अध्ययन नहीं किया। हां, केवल हिन्दी के प्रति अनुराग के कारण स्वाध्याय से हिन्दी की कुछ योग्यता प्राप्त की है। तब श्रद्धावश 'श्रीराम भक्ति' सुधियों के सहयोग से प्रकाशित कराई थी। उस संस्करण की सारी प्रतियां समाप्त हो चुकी हैं।

1965 से लेकर अब तक केवल मेरे शरीर में ही परिवर्तन नहीं आए, अपितु सत्संग, स्वाध्याय के कारण मेरे चिन्तन, अध्ययन-योग्यता और लेखन में भी अनेकविध परिवर्तन आए हैं। अतः श्री राम–भक्ति को मैंने पुनः लिखने का प्रयास किया। तदनन्तर प्रा. भद्रसेन जी वेद–दर्शन–आचार्य से प्रार्थना की, कि इसको संशोधित करके प्रकाशित कराने की कृपा करें। उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार करते हुए इस रचना को आप सबके सम्मुख रखा है। इसके लिए उन्होंने जो अमूल्य योगदान दिया, वह सर्वथा प्रत्यक्ष और प्रशंसनीय है। हां, शब्दों द्वारा उनका धन्यवाद करना एक औपचारिकता ही है। वस्तुतः मेरा हृदय उनके प्रति कृतज्ञ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय पाठको ! मैं आशा के साथ विश्वास भी करता हूं, कि आप मेरे प्रयत्न को चरितार्थ करने के लिए 'सोने में सुहागा' वाली उक्ति के अनुसार केवल इस रचना को पढ़ेंगे ही नहीं, अपितु अध्ययन के साथ श्रीराम के गुणों को भी धारण करने का प्रयास करेंगे। जिससे सभी को सच्ची सुख-शान्ति मिले और राम के भक्त कहलाने के पूर्ण अधिकारी बनें।

बीती जो जा चुकी है, उसकी फिकर तू मत कर।
बाकी की जो बची है, उसका सुधार कर॥

एक विचारणीय बात—

प्रभु की इस विशाल सृष्टि को आज तक बड़े से बड़े वैज्ञानिक, डाक्टर, विद्वान, योगी भी पूरी तरह से समझ नहीं सके। यह महान रचना ही प्रभु का साकार रूप है। इसी रचना के कुछ-कुछ अंशों को समझने से ही आधुनिक आविष्कार सामने आए हैं। ईश्वर की इन विविध रचनाओं (जड़-चेतन) को सही रूप में समझना और इनका सदुपयोग ही ईश्वर की पूजा है।

हां, महापुरुषों का जीवन-चरित इसको समझने का एक सरल-स्पष्ट साधन है।

—पथिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और भी—

पथिक जी पिछले बीस वर्षों से अनेक तरह से जनता की सेवा में जुटे हुए हैं। दुखितों की सेवा करते हुए पथिक जी ने उसकी गहराई में जाने का प्रयास किया। उन दुःखों के कारणों को अनुभव करके पथिक जी के हृदय में दुखितों के प्रति एक गहरी तड़प उपजी और अपनी इस भावना को अपनी योग्यता के अनुरूप जैसे-कैसे लिखने का प्रयास किया। जिसका एक प्रमाण यह रचना और उसका ढंग भी है।

इस रचना को इस रूप में दर्शाने का मूलभाव यही है, कि धर्म ही सुख, शान्ति का आधार है और इसी से ही दुःखों का नाश होता है। मनुस्मृति (2, 6 तथा 12) के अनुसार धर्म का बोध वेद, स्मृति, सदाचार तथा अपने आपे को अच्छा लगे से होता है। इन चारों साधनों में से सदाचार=महापुरुषों का जीवन व्यवहार अधिक स्पष्ट, सरल है। अतः पथिक जी ने श्रीरामचन्द्र जी के जीवन के आधार पर सभी को धर्म का मर्म बताने का प्रयास किया है।

एक कलाकार को जहां अपनी कला को प्रस्तुत करने का साधिकार अधिकार होता है, वहां मेरी दृष्टि से एक तड़प वाले को उससे भी पहले यह अधिकार हैं। क्योंकि वह पाठकों के लिए एक हमदर्दी भरा दर्द रखता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक जी की इस स्थिति का ध्यान रखते हुए मेरा यह अधिक से अधिक प्रयास रहा है, कि उनकी भावना को उन्हीं की दृष्टि से रखा जाए। जिससे उनकी तड़प सामने रहे, पुनरपि हो सकता है कहीं कहीं मैं अपने आप को बीच में ले आया हूं। पर इसका मूलभाव यही रहा है, कि पथिक जी की भावना को स्पष्ट कर सकूं।

हां, यह प्रयास जैसा बन सका, वह आपके हाथों में है।

—भद्रसेन

सारों का सार—

मिट नहीं सकता कभी, लिखा हुआ तकदीर का।
बस नहीं चलता कभी इन्सान की तदबीर का॥
कौन है जिस पर कभी, काली घटा छाई नहीं।
राम और घनश्याम पर, क्या विपद आई नहीं॥
याद है वन-वन भटकना, जानकी-रघुवीर का।
मिट नहीं ... ... ॥

दुःख कभी और सुख कभी, संसार की यह तस्वीर है।
धूप-छांव संग है सदा, यही संसार की रीत है॥
सुख दुःख में सदा सम रहे, परीक्षा है सदा इन्सान की।
अच्छे बुरे सदा मिलेंगे, व्यवहार कुशल रहे बुद्धि है इन्सान की॥
पथिको! राम कृष्ण पथ सदा चलो, तुम इन्हीं की सन्तान हो।
'पथिक' सत्यपथ से न कभी हटो, चाहे सामने कष्टों का अम्बार हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

विश्व के इतिहास में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र जी से पूर्व या पश्चात् इतना सर्वप्रिय मानव शायद ही कोई हुआ होगा। जिसके आदर्श जीवन से बाल, युवा, वृद्ध, नर-नारी, गृहस्थी एवं संन्यासी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श प्रेरणा, पथ-प्रदर्शन मिला एवं मिलता है।

वैसे तो सृष्टि के आरम्भ से ईश्वरीय ज्ञान वेद का अनेक विद्वानों ने मानव कल्याण के लिए भाष्य किया। वेदों के भाव को सरलता पूर्वक समझाने के लिए समय-समय पर अनेक ग्रन्थों का सृजन किया गया, जैसे कि उपवेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, वेदांग, दर्शनशास्त्र और स्मृतियां आदि। इन ग्रन्थों के बनाने वालों ने अपनी-अपनी बुद्धि एवं योग्यता के अनुरूप मानवमात्र को प्रेरणा देने के लिए इनकी रचना की। सर्वहितचिन्तक श्रीराम ने वेद आदि शास्त्रों की शिक्षा के अनुकूल अपने जीवन को बनाया। इस प्रकार शास्त्रों की मर्यादाओं को आचरण का रूप देकर शास्त्र को सदाचार के रूप में स्पष्ट किया। अतः मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम विश्व और विशेषतः आर्य जाति के केन्द्र बिन्दु बने। तभी तो लाखों वर्षों बाद भी आज सर्वप्रिय श्रीराम की चर्चा सुनकर सभी के मस्तिष्क श्रद्धा से झुक जाते हैं। आज हर आर्य (हिन्दू) किसी न किसी रूप में श्रीराम की भक्ति अवश्य ही करता है और श्रीराम के आदर्श को स्वीकार करता है। श्रीराम के अनन्य भक्त एवं सेवक सर्वश्री लक्ष्मण, भरत, हनुमान,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगद, वाल्मीकि, गोस्वामीतुलसीदास, गुरुनानक, रामतीर्थ, गान्धी और लाल बहादुर शास्त्री आदि अनेकानेक हुए हैं। जिन्होंने श्री राम के उज्ज्वल जीवन के आदर्शों को समझा और अपने जीवन में उनको अपना कर अमर हो गए। युग परिवर्तन के साथ आज रामभक्ति का रूप बदल रहा है। अनेक भव्य राम मन्दिर आए दिन बनते चले जा रहे हैं और राम नाम की महिमा का बहुत ही अधिक प्रचार हो रहा है, पुनरपि मानव समाज तदनुरूप सुखी नहीं है। जबकि कीर्ति की कामना से बड़े-बड़े दानियों ने विशाल मन्दिर और गगनचुम्बी विचित्र-विचित्र इमारतें भी बनवाई हैं।

युगपुरुष भगवान राम ने वेदोक्त जीवन बिताकर वह स्थान प्राप्त किया, जो आज तक अन्य कोई भी प्राप्त न कर सका। यह सम्मान केवल भगवान राम को ही वेद के अनुकूल जीवन बिताने से प्राप्त हुआ है। श्री राम इतने सर्वप्रिय हुए, कि स्वतः ही महानिर्धन की झोंपड़ी से राजाओं (प्रशासकों) के महलों तक उनके यश का गुणगान होता है। रघुकुल नायक श्रीराम की भक्ति के वास्तविक स्वरूप के दिग्दर्शनार्थ ही यह लघु प्रयास है। अब यह पाठकों पर निर्भर है, कि श्रीराम को समझने और उनके गुणों को धारण करने में वे कितना सफल होते हैं।

नाम और नामी का महत्त्व—

नाम में नामी छिपा है, नाम पर मत खो ओ बन्दे।
नाम में बस नाम है, नामी में नाम है,
जान ले ओ बन्दे॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशुओं, पक्षियों की सन्तानों का नामकरण कैसा ? यह कौन करता है अर्थात् कोई भी नहीं ? बस जो जिस जाति में होता है, उसको उसी नाम से पुकारा जाता है। जैसे कुत्ते के बच्चे का नाम भी कुत्ता ही होता है, और शेर के बच्चे को शेर ही कहा जाता है। पर मानव की सन्तान का नाम विधिपूर्वक रखा जाता है। जैसे कि महाराज दशरथ के प्रिय पुत्र भगवान राम का और श्री राम के पुत्र लव-कुश का हुआ और ऐसा ही आजकल हमारे परिवारों में भी होता है। यह श्रेय एकमात्र मानव जाति को हीं प्राप्त होता है, कि वह श्रद्धा, प्रेम तथा उत्साह से अपनी सन्तान का नामकरण संस्कार करता है। कहने को तो सोलह संस्कार प्रसिद्ध हैं, पर प्रायः कुछ ही विधिवत होते हैं। मुख्यतः विवाह ही याद रहता है। हां, नामकरण का भी अपना विशेष स्थान है। इन सभी संस्कारों का एक विशेष महत्त्व है और ये हमारी संस्कृति, सभ्यता को भी उजागर करते हैं। यहां केवल नामकरण पर ही विचार करना है और वह भी राम, लक्ष्मण आदि नामों पर।

महाराज दशरथ ने सन्तान की दृष्टि से तीन विवाह किए, पर जब फिर भी समय पर सन्तान न हुई, तो 'पुत्रेष्टि' यज्ञ कराया और आशातीत फल हुआ। यह भी एक विशेष प्रकार के संस्कार का एक रूप था। वैसे तो निःसन्तान धनाढ्य लाखों रुपये खर्च करके आज भी अनेक तरह के उपाय करते हैं।

श्रद्धा, भक्ति, लगन और निष्ठा के साथ किए गए यज्ञ के पश्चात महाराज दशरथ के यथासमय चार पुत्र हुए। इनके नामकरण के लिए यथावसर महाराज दशरथ पूज्यपाद महर्षि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसिष्ठ जी की सेवा में पहुंचे और महर्षि से प्रार्थना की, कि आप स्वयं मेरे सुपुत्रों का नामकरण संस्कार सम्पन्न करें। महर्षि ने गहरे चिन्तन के बाद इनके नाम रखे।

सबसे पहले बड़े बेटे का नाम राम रखा और अन्यों का क्रमशः लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न। पाठको! यहां यह जानना जरूरी है, कि यही नाम ही क्यों रखे?

मेरे विचार से विशेष संस्कारों से उत्पन्न ये सभी बालक और जिनके आगे भी यथासमय विधिवत अन्य संस्कार हुए। उनको स्वभाव के अनुरूप संस्कृत करने के लिए उस-उस नाम से. विशेष संस्कार से सम्पन्न किया गया। जैसे कि— ईश्वर सर्वव्यापक है, वह जड़, चेतन में रना हुआ है, अतः बड़े बेटे का नाम राम रखा, कि जिससे अपने गुण, कर्म, स्वभाव से यह सबके हृदयों में रमा रहे। राम, रमा, मरा तीनों में तीन-तीन एक से अक्षर हैं, पर केवल आगे-पीछे का ही भेद है। कहते हैं वाल्मीकि ने मरा, मरा का जाप करते-करते राम, भगवान के रहस्य को पकड़ लिया। हां, विश्व के आदि कवि, महान विद्वान महर्षि वाल्मीकि का चोर, डाकू की किंवदन्ती से सम्बन्ध जोड़ना केवल अनुचित ही नहीं, अपितु अन्यायपूर्ण है तथा यह उनका अपमान है।

लक्ष्मण—जिसको सबकी सेवा का ध्यान रहे, जो अपने लक्ष्य पर अडिग रहे।

भरत— जो सबके भरण पोषण, पालन का ध्यान रखे।

शत्रुघ्न— जो राष्ट्र के भीतरी तथा बाहरी शत्रुओं का विधिवत दमन (मर्दन) करे, वह शत्रुघ्न है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम में नामी का महत्त्व—

भगवान राम अपने आदर्श जीवन, तप-त्याग-वैराग्य आदि दिव्य गुणों से मर्यादा पालक एवं भगवान कहलाये, तभी तो वे आज भी अमर हैं। क्या उनसे पहले किसी का राम नाम नहीं था ? और क्या आज भी लाखों राम शब्दयुक्त नाम वाले व्यक्ति नहीं हैं ? पर उनको कौन जानता है ? जितना कि श्री राम को हम जानते हैं।

श्रीराम ने ईश्वर की आज्ञा— वेद—उपदेश को सर्वोपरि माना। राम में ईश्वर रमा था। वैसे तो मेरे आप में भी ईश्वर है, पर हम उसको अपने जीवन में रमाते नहीं, अपितु अनेकधा हमारे अन्दर पशु-पक्षी का रूप रमा अधिक चरितार्थ होता है। हां, भगवान राम ने ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुकूल अपने जीवन को पूरी तरह से व्यतीत किया। तभी वे इतने सर्वप्रिय हुए। जैसे कि आजकल हमारे हृदयों में अनेक देशभक्त, अनन्यसमाजसेवक बसे हुए हैं— नेता जी सुभाषचन्द्र, गान्धी जी, शास्त्री जी आदि; ये सब अपने-अपने अनोखेपन से हमारे हृदयों में रमे हुए हैं।

तभी तो कहा है—

मानव की पूजा कौन करे, मानवता पूजी जाती है।
राम कृष्ण की पूजा कौन करे, गुणों की पूजा होती है॥

प्रेरणास्रोत श्रीराम—

भक्ति, सेवा, लक्ष्मण, हनुमत, करुणा, दया है सीताराम।
वनवासी बनकर वर्षों ही ऋषियों की सेवा की थी निष्काम॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजतिलक, वनवास था, जिनके जीवनपथ में एक समान।
उनकी कल की विजय, आज की दीपावली का पर्व महान॥

मर्यादापालक राम और भरत में बहुत ही अधिक समानता थी। अतः दोनों के मन मन्दिर एक से थे। कौशल्या तथा ककई ने भले ही अलग-अलग राम एवं भरत को जन्म दिया हो, परन्तु भरत में राम रमा हुआ था। तभी तो भरत का प्रत्येक कार्य राम के अनुरूप होता था।

भरत से भारत शब्द प्रचलित हुआ है। इस दृष्टि से शकुन्तला पुत्र भरत की अधिक प्रसिद्धि है। तभी तो कहा है—

जननी जने तो भक्तजन, या दाता या शूर।
इससे तो वह बांझ भली, काहे गवाए नूर॥

हमारे इतिहास में दो भरत अधिक प्रसिद्ध हैं। एक सन्तसेवी, साधु स्वभावी भरत था, तो दूसरा निडर, बलशाली; बचपन से ही शेरों के दान्त गिनने वाला शूरवीर भरत।

विश्व में आर्यभूमि भारत को ही यह गौरव प्राप्त है, कि यहां जहां मर्यादापालक श्री राम हुए, वहीं भरत सदृश वीर बालक भी हुए। हम— आप इनके अनुयायी हैं और इनके विशेष गौरव को समझते हैं।

अतः आज भारतीय बालकों को यह गुन गुनाना चाहिए, कि—

पुत्र मैं तेरा ऐ भारत मां!
भरत सम वीर बनूंगा।
मुँह खोल कर शेर बब्बर का,
एक एक कर दान्त गिनूंगा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां हर बाला सीता देवी की प्रतिमा,
हर बच्चा – बच्चा राम है ।
चन्दन है इस देश की माटी,
तपोभूमि हर ग्राम है ॥

हर शरीर मन्दिर सा पावन,
हर मानव यहां उपकारी है ।
हर बालिका सीता…… ..,
बच्चा – बच्चा राम है ॥

जहां सिंह बन गए खिलौनें,
गाय यहां मां प्यारी है ।
यहां कर्म से भाग्य बदलते,
श्रमनिष्ठा कल्याणी है ॥

त्याग और तप को गाथायें,
गाती कवि की वाणी है ।
यहां हर बाला सीता की प्रतिमा,
यहां बच्चा-बच्चा राम है ॥
ज्ञान है यहां गंगाजल सा,
निर्मल है, अविराम है ।
यहां के सैनिक समर भूमि में,
गाया करते वेद-गीता ॥
जीवन का आदर्श यहां पर
परमेश्वर का धाम है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां हर बाला सीता की प्रतिमा,
यहां बच्च-बच्चा राम है ॥
चन्दन है इस देश की माटी,
तपोभूमि हर ग्राम है ॥

राम गुणगान—

मेरे राम सबके राम, हम गीत राम के गाते हैं ।
राम के आदर्शों पर चलकर, जीवन सफल बनाते हैं ॥
बचपन में ऋषिकुल जाकर, ऋषि मुनियों से विद्या पाई ।
सत्य सनातन शिक्षा पाकर, जग में जीवन ज्योति जलाई ॥
हम भी उनके गुण धारणकर, प्रभु चरणों में आते हैं ।
मेरे राम सबके राम ... ... ॥
यज्ञ की रक्षा करने हेतु, श्रीराम को था मांग लिया ।
दुष्टों का संहार कराने, गुरु ने राम को साथ लिया ॥
रक्षक बनकर धर्म निभाया, आगे कदम बढ़ाते हैं ।
मेरे राम सबके राम ... ... ॥
राम की महिमा जितनी गाए, फिर भी सज्जनों थोड़ी है ।
लाखों वर्ष से अमर है प्रेमी, सीता राम की जोड़ी है ॥
'विश्व प्रेमी' ईश्वरविश्वासी अपना फर्ज निभाते हैं ।
मेरे राम सबके राम, हम गीत राम के गाते हैं ॥

रामायण तथा महाभारत का सार—

मिट नहीं सकता कभी, लिखा हुआ तकदीर का ।
बस नहीं चलता कभी, इन्सान की तदबीर का ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुख कभी और सुख कभी, यही संसार की तस्वीर है।
धूप-छांव संग हैं. इसी में मानव जीवन का सार है॥
राम और कृष्ण पर क्या काली घटा छाई नहीं।
जानकी, द्रौपदी की दुर्दशा हम अभी भूले नहीं॥
याद है वन-वन भटकना, जानकी रघुवीर का।
मिट नहीं सकता कभी, लिखा हुआ तकदीर का॥

भगवान राम का जीवन चाहे वह बालपन का हो, युवाकाल का, गृहस्थ के दिनों का या वनवास काल का, अथवा लंका-युद्ध का या पुनः राजतिलक के बाद राज्यभार चलाने का, अर्थात प्रत्येक स्थिति और क्षण में श्रीराम आदर्श मर्यादा पालक रहे। तभी तो कहते हैं, कि श्री राम माता–पिता के आदर्श भक्त (पुत्र) थे, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श वनवासी, आदर्श योद्धा, आदर्श मित्र, आदर्श न्याय—धर्म रक्षक और आदर्श राजा थे। राम बस राम ही थे और सबमें अतएव रमे हुए थे। सबके दिलों पर उनका राज था और यह आज भी बना हुआ है। तभी तो राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी का यह सुस्वप्न था, कि भारत में रामराज्य हो। महात्मा गान्धी ने अन्तिम श्वास भी हे राम, हे राम के साथ लिया था।

पुरुषोत्तम श्रीराम—

सदा रोशनी चान्द से होती है, सितारों से नहीं।
बुद्धि, शक्ति भगवान से मिलती हैं, इन्सान से नहीं॥

चन्द्रमा (चन्दा मामा) 14 कला सम्पूर्ण है, तो मेरे राम भी 14 कलाओं से सम्पन्न हैं। चन्द्रमा सूर्य से ज्योति प्राप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है, जबकि सूर्य स्वज्योतिसम्पन्न, और उषा—उष्मा—ऊर्जा का दाता है। चन्द्रमा शीतलता तथा सोम्यता का प्रतिनिधि है और यह एक प्राकृतिक व्यवस्था है। चन्द्रमा प्रकृति के नियमानुसार पूर्णमासी को पूर्ण प्रकाश देता है, तो घटते-घटते अमावस्या को तनिक भी प्रकाश नहीं देता। चन्द्रमा की 14 कलायें मानी जाती हैं, क्योंकि 14 दिनों तक घटता और फिर बढ़ता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण को षोडश कला सम्पूर्ण कहा जाता है, तो श्री राम को चतुर्दश कला सम्पन्न।

कला से अभिप्राय यहां गुणों, मर्यादाओं से हैं।

जैसे कि—

1. नियमित जीवन— रामायण में स्थान-स्थान पर आता है, कि नित्यप्रति प्रातःकाल श्री राम जागते थे। शौच, स्नान आदि आवश्यक कार्यों को पूर्ण करके नियमित व्यायाम और शुद्ध-सादा भोजन ग्रहण करते थे।

2. शिष्टाचार— प्रतिदिन प्रातः उठकर माता-पिता-गुरुजनों और पूज्यों को विधिवत नमस्कार करते थे। तभी तो कहा है—

प्रातःकाल उठके रघूनाथा; मातु-पितु गुरु नावहि माथा।

ऐसे ही—

3. आदर्श शिष्य, 4. आदर्श पुत्र, 5. आदर्श भाई, 6. मान्य मित्र; 7. प्रशंसनीय पति, 8. सच्चा राजा, 9. प्रतापी पिता, 10. सत्यवादी (प्राण जाई पर वचन न जाई),

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. कर्तव्यपरायण, 12. कृतज्ञ, 13. सर्वस्नेही, और 14. धर्मात्मा—

तभी तो,

प्रतिदिन प्रात:सायं सन्ध्या-वन्दन, अग्निहोत्र सदृश कर्मकाण्ड का जहाँ श्रीराम पालन करते थे, वहां आचरणात्मक धृति, क्षमा, संयम आदि व्रतों का पालन करने के कारण श्रीराम धर्म के साक्षात रूप थे।

श्रीराम की चौदह कलाओं का एक चित्रण यह भी हो सकता है। जैसे कि महर्षि वाल्मीकि के पूछने पर मुनि नारद ने श्रीराम के अनेक गुण बताए थे।

हम भूल गए

प्रभु दर्शन पाने आए थे, प्रभु दर्शन पाना भूल गए।
राम कृष्ण के पथ पर या, सतपथ पर चलना भूल गए॥
वेदशास्त्र पढ़ने पढ़ाने थे, इनके नाम तक भी हम भूल गए।
सन्त साधुओं के चरणों में, हम श्रद्धा से जाना भूल गए॥
हम एक पिता की सन्तान सभी, यह छोटी सी बात भी भूल गए।
मानव चोला पा करके हम मानवता को ही क्यों भूल गए॥
मानव मानव में है भेद कहां, हम यहां हिन्दू सिख ईसाई बन बैठे।
जाति भाषा प्रान्त के चक्र में पड़कर हम भारतीय हैं यह भूल गए॥
धरती के जितने मानव हैं, सबमें मानवता का इक नाता है।
हम पाखण्ड संकीर्णता में पड़ के वेदों की आज्ञा को ही भूल गए॥
पाखण्ड आडम्बर मिटाने को, कबीर, नानक, दयानन्द आए थे।
'पथिक' स्वार्थी पाखण्डी बन करके प्रभु दर्शन पाना क्यों भूल गए॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण की दृष्टि में राम—

राम और रावण शब्द में पहला अक्षर (रा) एक समान है और दोनों ही मानव हैं, जैसे मैं और आप। परन्तु दोनों में एक अन्तर है और वह है भावों का; गुणों का। जो प्रत्येक मानव को एक दूसरे की पहचान कराता है। जैसे आप के कर्तव्यों, कर्मों से ही आप की पहचान होती है। राम और रावण के भावों में अन्तर के कारण ही हम राम के भक्त बनना चाहते हैं, रावण के नहीं। इस स्थिति में एक प्रश्न उभरता है, कि इन दोनों में क्या अन्तर है? विचारने पर प्रत्येक का यही उत्तर होगा, कि राम में मानवता, तो रावण में दानवता थी।

जब कोई बहुरूपिया बनता है, किसी के रूप को धारण करता है, तो क्यों? वस्तुतः उस समय उसका यही भाव होता है, कि वह इस रूप को दिखाकर जनता को, देखने वालों को खुश कर सके। जिससे ईनाम प्राप्त कर सके और कुछ दूसरों को ठगने के लिए रूप बदलते हैं।

बहुरूपिये की यदि वास्तविकता नहीं खुलती, तो उसे सरलता से ईनाम मिल जाता है। परन्तु जब कोई (रूप बदल कर) ठग लेता है, तो प्रभावित यह अनुभव करता है, कि मैं ठगा गया। इसने मेरे साथ धोखा किया है। अनेक बाह्यरूप से रूप बदले बिना भी दूसरों को अन्धेरे में रखकर ठग लेते हैं। रावण भी रूप बदलने की कला में प्रवीण था। रावण ने साधुवेश धारण करके सीता को ठगा था। अपहरण के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात रावण ने सीधे ढंग से सीता को अपनी पत्नी बनाने के अनेक प्रयास किये, पर सफलता न मिली। इन प्रयासों से हताश रोकर रावण ने राम का रूप धारण किया। राम के रूप को धारण करके जब रावण सीता के पास जाने लगा, तो रावण के विचारों में स्वतः ही हल-चल शुरू हुई और वह सोचने लगा; कि जब मैंने राम के रूप को अपनाया है, तो मुझे कर्म भी राम जैसे ही करने चाहिए, रावण जैसे नहीं। यह ठीक है, कि मैंने पहले भी साधु का रूप धारण किया, पर उस समय मेरी भावना, रावणवाली ही थी। ठगी एक बार चलती है, बार-बार नहीं। तब मैं एक सामान्य साधु था, पर अब तो मैंने एक विशेष व्यक्ति का रूप धारण किया हुआ है। सामान्य और विशेष व्यक्ति में अन्तर होता है। अतः रावण ने जब राम का रूप धारण किया, तो उसकी अन्तरत्मा ने उसको धिक्कारा। और राम के रूप ने उसे प्रेरित किया; कि जैसे तू ऊपर से राम के रूप को बना रहा है; वैसे ही राम जैसे कर्म भी कर। राम के रूप ने उसकी अन्तरात्मा को जगा दिया। पर जब पहले साधु रूप रचा था, तो तब उसकी अन्तरात्मा जागी नहीं थी। तब उसकी आत्मा सोई हुई थी, यदि तब भी वह जागती, तो यह स्थिति न आती और न ही रावण के वंश का नाश होता।

वैसे आजकल भी अनेक बहुरूपिये अनेक रूपों को धारण करते हैं और अनेक इसको ठगी का साधन बनाते हैं। नकल-नकल है और असल-असल है। हां, नकल के लिए भी अकल चाहिए। जैसे कि सत्य बोलने के लिए बहानों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत नहीं होती, सहज में ही सारा कार्य चलता है। सुननें वाला भी समझ जाता है इसमें बनावट, छल, कपट नहीं है। अत: वह उसका विश्वास करता है। पर झूठ, ठगी करने वाले को अनेक तरह की बनावट का सहारा लेना पड़ता है।

सारांश— हम जब कोई बुरा कार्य करने की सोचते हैं, तो हमारे अन्दर स्वयं एक प्रेरणा होती है, अन्दर से आवाज आती है, कि यह न कर। यदि तब हम बुरे कार्य को नहीं करते, तो हम राम के भक्त हैं और यदि उस को करते हैं, तो रावण के।

राम के भक्तों में राम—

पूर्व प्रकरण में निर्दिष्ट रावण की अन्तरात्मा की भावना को यदि वर्तमान काल में राम के भक्त अपनें आप पर घटायें; तो क्या कभी कोई रामभक्त किसी से किसी प्रकार का छल, कपट, धोखा करेगा ? अर्थात् कभी भी नहीं। जब रावण राम के वेश को धारण करने के बाद सीता के सामने जाने की हिम्मत न कर सका, तो क्या आज राम के भक्त अपने आप को रामभक्त कहते हुए किसी को किसी प्रकार का धोखा दे सकते हैं ? अर्थात कभी भी नहीं। राम का भक्त तो सच्चे दिल से राम का भक्त बनकर श्रवणकुमार की तरह माता-पिता की सेवा ही करेगा।

रामभक्त बनकर जब तक हम राम की तरह माता-पिता के भक्त नहीं बनते, तब तक हम राम के भक्त कहलाने के योग्य नहीं, अपितु हम तो बहुरूपिये हैं। अत: जो भी राम की भक्ति करना चाहता है या राम की जो भी भक्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है, उस रामभक्त को इस पर अवश्य ही विचार करना चाहिए।

राम सच्चा था, मर्यादापालक था, अतः हमें भी सच्चा और मर्यादापालक होना चाहिए। हां, प्रत्येक पाठक को यह धारणा अपनानी चाहिए, कि जब वह राम का भक्त है तो उस को राम के दिव्य गुणों को अपनाना चाहिए। हम सब जन रामराज्य चाहते हैं, तो हमें उस के लिए राम जैसा आचरण भी अपनाना चाहिए। यदि हम राम जैसा आचरण करना नहीं चाहते, तो रामराज्य कैसे आएगा?

देशी और विदेशी फूल—

फूल लेकर फूल आया, फूल कर मैंने कहा।
तुम तो खुद ही फूल हो, फिर फूल का करना है क्या?

फूलों में एक उत्कृष्ट फूल गुलाब का है, इस में रूप, रस और सुगन्ध हैं। हां, इस में कांटे भी होते हैं, पर इस में कांटें क्यों? संक्षिप्त में इस का यही उत्तर कहा जा सकता है, कि कांटे इस में रक्षार्थ होते हैं। यदि प्रकृति कांटे न रखती, तो प्रत्येक (दर्शक, बालक) इस को सरलता से तोड़ लेता। हां, इस में सुन्दर रूप के साथ सुगन्ध भी होती हैं। परन्तु ऐसे छोटे-बड़े अनेक फूल होते हैं, जिन में सुगन्ध नहीं होती। वे कहने के लिए फूल होते हैं, परन्तु उन में सुगन्ध नहीं होती, जैसे कि बहुत सारे विदेशी फूल।

विवेकशीलो! इन आकर्षक, सर्वप्रिय फूलों की तरह भगवान राम भी सर्वप्रिय सुमन थे। राम पुष्प में कैसा अनोखा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षण था, कैसी विचित्र सुगन्ध थी, कि लाखों वर्षों में भी उस में कमी नहीं आई, अपितु बढ़ ही रही है। हां, सोचने वाली बात तो यह है, कि राम के भक्तों में देसी गुलाब जैसी सुगन्ध है या रावण सी दुर्गन्ध। जब हम रावण की भावना को पसन्द नहीं करते, तो आज हम विदेशी संस्कृति को अपनाने के लिए विशेष महत्त्व और गौरव क्यों दे रहे हैं? जब कि विदेशी संस्कृति में न तो राम की भक्ति है, न ही सीता सी दाम्पत्य-शुचिता, न ही भाई भरत जैसा प्यार, न ही लक्ष्मण-हनुमान जैसी सेवा। फिर भी विदेशी रहन-सहन, खान-पान को हम अपनाते चले जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम राम के भक्त होंगे या किसी और के? हां, राम के भक्त बनने के लिए तो इस को छोड़ना होगा। निःसन्देह विदेशों में भी हजारों राम के भक्त हैं। राम को अपनाने पर ही यत्र-तत्र सभी राम के भक्त कहला सकते हैं।

फूल है गुलाब का सुगन्ध लीजिए।
इस में वर्णन है भगवान का महक लीजिए॥
राम का यशोगान ही नहीं, राम के गुण ग्रहण कीजिए।
मात-पिता, गुरु की सेवा मन से कीजिए॥
राम रमा है सब के मन में तू सब में रम जा।
अपने ही जीवन से तू जग में चमक जा॥

केवल जानने से मानना और केवल मानने से करना श्रेष्ठतम है। आज हम राम को जानते और मानते हैं, पर यदि राम जैसे गुणों को पूर्णतः अपने जीवन में उतारें। चाहे श्रीराम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दो, चार गुणों को ही अपनायें, पुनरपि वीर हनुमान की तरह हम भी अमर हो सकते हैं।

मानव कृत मूर्तियों की अपेक्षा ईश्वर रचित पदार्थों की पूजा, भक्ति ही प्रभु सेवा एवं भगवान की सच्ची भक्ति है।

तभी तो महात्मा बुद्ध ने कहा था—निर्धन, दीन, दुखी, असहाय, विकलांग की निष्काम सेवा, सहायता ही मेरी सेवा, पूजा है।

सदाचार जिस को प्रिय प्राण होगा।
वही वीर संसार से विधिवत पार होगा॥

भक्ति और भक्त—

भक्ति क्या है? भज धातु से भक्ति और भक्त शब्द बनते हैं। भज धातु सेवा के अर्थ में आती है। अतः किसी की सेवा करना, आज्ञा मानना, उसके गीत गाना उस की भक्ति है और ऐसा करने वाला ही भक्त कहलाता है। जैसे कि श्रवणकुमार को हम माता-पिता का भक्त मानते हैं, क्योंकि उसने उनकी अनुपम सेवा की थी।

आरुणि और एकलव्य गुरुभक्त कहलाते हैं, क्योंकि उन्होंने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य किया था।

किसी से प्यार करने वाला, किसी के यश को बढ़ाने वाला भी उस का भक्त माना जाता है, जैसे कि रामभक्त। रामभक्त रामायण के माध्यम से भगवान राम का यशोगान करते नहीं थकते। रामनवमी, दीपावली पर्व मनाकर श्रीराम का जय-जयकार करते हैं। उन के प्रति अपना प्यार प्रकट करते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही——

भ्रातृ-भक्ति की दृष्टि से लक्ष्मण और भरत को अनूठा माना जाता है और हम इस बात का गुणगान करते हैं, क्योंकि इस से हमें प्रबल प्रेरणा एवं जीवन सुधारने का सु-अवसर भी मिलता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का बालपन हो या अग्रिम जीवन सारा का सारा मर्यादा में बन्धा हुआ था। यह मर्यादापालन हमें भी राम जैसी मर्यादा की पालना और सेवा के लिए बाध्य करता है। तभी तो जब कोई पर्व आता है, तब हम उस ओर स्वतः खिचे चले जाते हैं। चाहे इस बात को हजारों पर हजार वर्ष बीत गए हों। यह हमारे स्वर्णिम इतिहास की स्वर्णिम बात है।

ऐसी स्थिति में आज राम के भक्तों का परम कर्तव्य एवं धर्म बन जाता है, कि वे राम की तरह माता-पिता की आज्ञा को मानें। भारतीय नारियां सीता की तरह अपने धर्म को पहचानें। वस्तुतः श्री राम के जीवन को जानकर और अपने जीवन में राम के गुणों को अपना कर ही हम राम के सच्चे भक्त बन सकते हैं। यदि हम राम के गुणों को अपनाते नहीं, तो रामभक्त परिवारों में भी यह स्थिति सामने आ सकती है।

'बहू जरा चाय तो भेजना—बीमार और बूढ़े दयाशंकर जी ने आवाज लगाई। ओफ क्या मुसीबत है, रविवार के दिन भी इस समय आराम से नहीं बैठने देते, झुंझलाती हुई बहू ने अपने पति रमेश से कहा— 9-30 होने जा रहे हैं और रामायण के समय पर ही चाय-चाय की रट शुरू हो गई है। अब आप ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर चाय बनाकर दीजिए, मैं तो रामायण देखकर ही हिलूंगी। रमेश ने भी वहीं से ऊंची आवाज में कहा—पिता जी, आप भी एक पल चैन नहीं लेने देते। बड़ी कठिनाई से सारे परिवार के साथ बैठकर एक यह धारावाहिक देखने का मौका मिलता है।

विज्ञापनों के पश्चात रामायण शुरू हुई। सीता की माता विदा करते समय समझा रही हैं। बेटी! सुसराल में अपने सास-ससुर की सेवा करना। अगले दृश्य में राम दशरथ की सेवा में रत हैं।

रामायण समाप्त हुए पर्याप्त समय हो चुका है और सभी आराम से बैठे हुए क्रमशः इस पर अपनी टिप्पणियां कर रहे हैं। तब रमेश ने कहा—क्या ही अच्छा धारावाहिक बनाया है। इस पर उसकी पत्नी ने कहा—हां, मुझे इस प्रकार के शिक्षाप्रद नाटक बहुत ही पसन्द हैं और बच्चों पर भी इस का बहुत अच्छा प्रभाव होता हैं।

बाहर बैठे हुए दयाशंकर जी यह सब विचार सुन कर सोचने लगे, कि आखिर यह प्रभाव होता क्या है?

—अशोक कोठारी के 'रामायण जारी है।' के आधार पर।

तभी तो कहा है—

राम नाम जपते रहे, नहीं राम जैसा आचार।
निष्फल ता का बोलना, जो नहीं राम जैसा व्यवहार॥

भक्ति और भक्त शब्द को समझने के लिए जहां पितृभक्त श्रवण, गुरुभक्त आरुणि-एकलव्य, भ्रातृभक्त लक्ष्मण–भरत और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामभक्त हनुमान का उदाहरण वहुत ही स्पष्ट है। ऐसे ही प्रभुभक्त दयानन्द का दृष्टान्त भी वहुत उपयोगी है।

प्रभुभक्त दयानन्द—

दयानन्द ने प्रभु के सत्यस्वरूप और वेद आज्ञा को सामने रखकर अपना सारा जीवन इन्हीं दोनों में लगा दिया। महर्षि दयानन्द प्रभु के 'सत्यस्वरूप' को स्वीकार करते हैं। अतएव उन्होंने प्रत्येक व्यवहार्य वस्तु और व्यवहार का सत्यार्थप्रकाश में सत्यस्वरूप प्रतिपादित किया और सर्वत्र 'सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने' पर सदा बल दिया।

ईश्वर के वनाये सूर्य, चन्द्रमा, जल, वायु के समान वेद को सभी के लिए समान रूप से उपकारक, ग्राह्य माना। ईश्वर का ज्ञान होने से वेद को पूर्णतः अपनाने पर महर्षि ने विशेष वल दिया है। महर्षि की यह निश्चित धारणा थी, कि वेदज्ञान और सचाई के विना आज का मानव सुखी नहीं हो सकता। इस प्रकार प्रभु के सत्यस्वरूप और ईश्वर आज्ञा रूप वेद का प्रचार करके अपने प्रभुभक्त रूप को हर प्रकार से चरितार्थ किया।

हां, महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर के साथ स्मरण किया है।

देखो! श्रीरामचन्द्र वड़े महाराजाधिराज और उन की स्त्री सीता–महाराणी थी। समु. 11, पृ. 314

(वेदानन्द सम्पादित संस्करण)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थप्रकाश में रामकथा—

सुनो ! जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहां के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय विरुद्ध हो गया तो रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से विमुख कर दिया। उस के भाई विभीषण को राज्य दिया। 11, 236

जब रामचन्द्र सीता जी को ले हनुमान आदि के साथ लङ्का से चले आकाशमार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे तब सीता जी से कहा है कि—

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः।

युद्धकाण्ड 123, 20

सेतुबन्ध इति विख्यातम्। युद्धकाण्ड 123, 21

हे सीते ! तेरे वियोग से हम व्याकुल हो कर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास्य किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है उस की कृपा से हम को सब सामग्री यहां प्राप्त हुई। और देख यह सेतु हम ने बांध कर लङ्का में आके, उस रावण को मार, तुझ को ले आये। 11, 279-80

जैसे श्रीराम और लक्ष्मण ने विश्वामित्र आदि ऋषियों के यज्ञों की रक्षा की थी। वैसे ही महर्षि दयानन्द ने यज्ञ-हवन के सच्चे स्वरूप को सामने ला कर यज्ञों की रक्षा की।

इस प्रकरण का सारांश यह है, कि रामभक्त बनने और कहलाने के लिए हम सब को राम के गुणों को अपनाना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि—

रामचरित के प्रथम लेखक महर्षि वाल्मीकि हैं। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में नारदमुनि आए। आतिथ्य के पश्चात वार्तालाप में महर्षि ने नारद मुनि से पूछा, कि मैं किसी गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, सत्यवक्ता और दृढ़प्रतिज्ञ आदि विशेषणों वाले मनुष्य का जीवन चरित लिखना चाहता हूं। आप प्रायः घूमते रहते हैं, अतः बतलाइए इस समय ऐसा महापुरुष कौन है? तब नारद जी ने कहा, कि इस प्रकार के गुणों से युक्त रघुकुलतिलक श्रीराम हैं।

नारद जी के निर्देशों को ध्यान में रख कर महर्षि वाल्मीकि ने सरल-सरस संस्कृत भाषा में रामायण की रचना की। इसी को आधार बना कर गोस्वामी तुलसीदास जी आदि अनेक कवियों, सन्तों, विद्वानों ने समय-समय पर अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में रामकथा को गूंथा। उस-उस रूप में उदात्त रामकथा को पढ़ने वाला प्रत्येक चित्रण को तरोताजा अनुभव करता है। जैसेकि रामानन्द सागर द्वारा दूरदर्शन पर प्रस्तुत रामकथा हर तरह से आकर्षक, प्रभावक और तरोताजा लगती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आकांक्षाओं को वहां मूर्तरूप में अनुभव करता है।

गोस्वामी तुलसीदास—

आजकल उत्तर भारत में अधिकतम गोस्वामी कृत तुलसीरामायण का पाठ होता है। क्योंकि सामान्य जनता उन दिनों संस्कृत भाषा को नहीं जानती थी। अतः वह वाल्मीकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण का आनन्द उठा नहीं सकती थी, तब गोस्वामी जी नें अवधी (आधुनिक हिन्दी के प्रारम्भिक रूप) में रामकथा को प्रस्तुत किया। इसी के अनुरूप हम भगवान राम को ईश्वर का अवतार मानते हैं। गोस्वामी जी के हार्दिक भावों का यदि हम विश्लेषण करें, तो स्पष्ट होता है, कि जाति की रक्षार्थ समयानुकूल उन्हों नें श्रीराम को अवतार के रूप में प्रस्तुत किया है। हां, निराकार प्रभु के रूप को भी उन्हों ने दर्शाया है, जैसे कि—

विनु पग चले, सुने विन काना।
कर विन कर्म करे, विधि नाना॥
तन विन स्पर्श, नयन विन देखा,
ग्रहे घ्राण विन वास अशेखा।
आनन रहित सकल रस भोगी,
विन वाणी वक्ता बड़ योगी॥

गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरितमानस तथा विनय पत्रिका को पढ़ने से पता चलता है, कि गोस्वामी जी ने अपनें आप को राम के गुणों में रंग लिया था। ऐसी स्थिति में ही कहा जाता है—

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मै भी हो गई लाल॥

इसी भावनावशात् रामभक्ति में तल्लीन हो कर गोस्वामी जी विनयपत्रिका में कहते हैं—

'अरे मन ! तू ने कभी विश्राम नहीं किया। अपना सहज सुख स्वरूप भूल कर दिन-रात इन्द्रियों की ओर खिचा हुआ, जहां-तहां भटक रहा है। 1।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि विषयों के संग से तू ने अनेकों असह्य कष्ट सहे हैं और तू कठिन जाल में फंस गया है; तो भी हे मूर्ख ! तू ममता के अधीन हो कर उन्हें नहीं छोड़ता। इस प्रकार सब कुछ समझ कर भी वेसमझ हो रहा है। 2।

अनेक जन्मों में नाना प्रकार के कर्म करके तू उन्हीं की कीचड़ में फस गया है। हे चित्त ! विवेक रूपी जल प्राप्त किए विना यह कीचड़ कभी साफ नहीं हो सकता, ऐसा वेद का प्रमाण है। 3।

परमप्रभु, परम माता-पिता और गुरु रूप हरि से मिलने में ही अपना कल्याण है, पर तू तो उन को हृदय में कभी धारण ही नहीं करता, (दिन-रात विषयों को बटोरने में ही लगा रहता है) हे तुलसीदास ! ऐसे तलाव से कब प्यास मिट सकती, जिस के खोदने में ही सारा जीवन बीत जाए। 4।

विनय पत्रिका पृष्ठ 158

श्री हरि ! मेरा मन हठ नहीं छोड़ता। हे नाथ ! मैं दिन-रात इस को अनेक प्रकार से समझाता हूं, पर यह अपने ही स्वभाव के अनुसार करता। 1।

जैसे एक स्त्री सन्तान जनने के समय अत्यन्त असह्य वेदना का अनुभव करती हुई उस समय सोचती है, कि अब दोबारा इस चक्र में नहीं पड़ूगी। परन्तु कुछ समय वाद उसी पचड़े में पड़ जाती है। 2।

जैसे लालची कुत्ता जहां जाता है, वहीं उस के सिर जूते पड़ते हैं। फिर भी वह नीच उसी रास्ते पर भटकता है, मूर्ख को जरा भी लज्जा नहीं आती। 3।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी ही दशा मेरे मन की है, विषयों में कष्ट पाने पर भी यह उन्हीं को ओर दौड़ जाता है। मैं नाना प्रकार के उपाय करता-करता थक गया, परन्तु यह मन अत्यन्त बलवान और अजेय बना रहा। हे तुलसीदास ! यह तो तभी वश में हो सकता है, जब प्रेरणा करने वाले भगवान स्वयं ही इसे रोकें । 4 ।

(विनयपत्रिका पृ. 159-160)

वेद, शास्त्र और सन्तों ने मन को शुद्ध, पवित्र रखने के लिए जहां आहार (खान-पान) पर विशेष बल दिया है, वहां यम-नियमों के पालन के साथ प्रभु भक्ति का पथ भी बताया है।

मन की अथाह शक्ति एवं विचित्रता पर सब मुग्ध हैं। जैसे कि मन को वश में कर के गोस्वामी जी ने राम भक्ति रूपी भावों को एकत्रित कर के हिन्दुओं को बचा लिया।

अनियन्त्रित मन के बारे में कवि ने चेतावनी दी है—

मन लोभी, मन लालची, मन चंचल, मन चोर।
मन के मते न चालिये, पलक–पलक मन और ॥

राम बादशाह स्वामी रामतीर्थ जी ने भी इन विषय भोगों से मन को वश में कर के त्याग का चित्रण खींचते हुए लिखा है—

भागती फिरती थी दुनियां, जब तलब करते थे हम।
जब से नफरत हम ने की, यह बेकरार आने को है॥

भगवान राम अपने मन को वश करने की महानता के कारण ही, तो आज भी सब के मनों पर अपने आदर्शों से शासन किए हुए हैं। श्रीराम से प्रभावित अनेकों धनपतियों ने लाखों,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ों रुपये के मन्दिर, औषधालय बनवाए हैं।

प्रभ भक्तों के आदर्श जीवन ही मानवता को स्थिर रखते हैं। तभी तो कहा है--

जब से आए रहे रघुनाथा,
तब से भयऊ वनु मंगलदायक।
फूलहिं करहिं विटप विधि नाना,
मंजु ललित वर वेलि बिताना॥

जब से श्रीराम जी ने वन में निवास किया, तब से ही वन मंगलमय हो गया है। उस में विविध प्रकार की वनस्पतियां फूलती हैं तथा बड़ी सुन्दर लताओं के वितान बन गए हैं।

'अरे नीच! यदि श्री जानकी नाथ जी से तेरा प्रेम और नाता नहीं है, तो तेरे स्वार्थ और परमार्थ कैसे सिद्ध होंगे। इस अवस्था में ही, तो कुटिल कलियुग (भोगवाद) ने तुझे बीच में ठग लिया है, (जिस से लोक परलोक दोनों ही बिगड़ गए) भगवान के प्रेम से विहीन लोगों के लिए, वर्ण और आश्रम के धर्म केवल पोथियों में ही लिखे हुए हैं। उन के अनुसार कर्तव्य कर्म कोई नहीं करता, ऐसे कर्तव्यहीन कोरे भेष वैसे ही हैं, जैसे बिना प्राणों के शरीर हो, उस से कोई लाभ नहीं'। (विनयपत्रिका)

महारानी सीता—

आर्य संस्कृति; सभ्यता एवं धर्म की मूर्ति अर्थात नारी रत्न मातेश्वरी सीता। जैसे युधिष्ठिर को धर्मपुत्र सम्बोधित किया जाता है। वैसे ही रामायण की नायिका, एवं भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाली श्री सीता जी को धर्मपुत्री के रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में स्मरण किया जाता है। हमारे धर्मग्रन्थ वेद तथा अन्य शास्त्रों में मातृशक्ति को सम्मान देते हुए नारी को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। तभी तो अर्धांगिनी के कारण ही पुरुष पूर्ण होता है और वार्तालाप में महिलाओं को देवी, गृहलक्ष्मी से सम्बोधित किया जाता है।

नारी रत्न मातेश्वरी सीता जी ने जीवनपर्यन्त एक महान आदर्श नारी का जीवन व्यतीत कर विश्व में नारी जाति का मस्तिष्क ऊंचा किया है। मातृशक्ति सीता जी वेद मर्यादा को पूर्ण रूपेण जानती थीं, तभी तो महान संकटों को सहन कर अपनी विवेक बुद्धि, महानता और धैर्य का परिचय दिया और इस प्रकार नारी धर्म की मर्यादा का पालन कर विश्व में आर्य सभ्यता को चार चांद लगाए।

श्री राम चन्द्र जी के वन प्रस्थान के समय साथ जाने के लिए सीता जी ने जो कुछ कहा, वह नारी जाति के लिए सदा ही पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा। भगवान राम ने वन जाते समय वन के संकटों को बता कर अयोध्या में रहने को बात कही। इस के साथ सास-ससुर की सेवा का भी स्मरण कराया, अर्थात किसी तरह सीता साथ न जाए, इस के लिए अनेक युक्तियां दीं। परन्तु धर्मपुत्री, नारी धर्म (कर्तव्य) ज्ञाता सीता जी ने वेद, शास्त्र के प्रमाण देकर नम्रतापूर्वक प्रार्थना की, कि प्राणनाथ मेरे लिए आप के विना स्वर्ग भी नरक है और आप के साथ नरक भी स्वर्ग ही है।

यस्त्वया सह स स्वर्गो निरयो यस्त्वया विना।
इति जानन् परां प्रीतिं गच्छ मया सह॥

आरण्यकाण्ड, सर्ग 30, 18

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः आप अपने वेदोक्त धर्म को स्मरण कर मुझे अपने साथ रखने के कर्तव्य का पालन करें।

वनवास में प्रेम प्रतिमा सीता ने अपने सद्व्यवहार से प्रिय राम के यश को कस्तूरी की सुगन्ध की तरह बिखेरा और वनवास में कठिन व्रतों का पूर्ण पालन कर विश्व में अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया। नारी शक्ति की महत्ता जहां इस प्रकार चरितार्थ की, वहां देवर-भाभी के पवित्र सम्वन्ध एवं व्यवहार के आदर्श को भी दर्शाया।

अपहरण के पश्चात अपने धैर्य, बुद्धिमत्ता आदि से रावण की कुटिलता से अपने आप को और रावण को भी बचाया। प्रियतम श्रीराम के स्मरण में अपने आप को भुला दिया। जब सीता ने त्रिजटा से कहा, कि यदि कहीं मैं प्रिय राम के वियोग में राम का स्मरण करती-करती राम बन गई, तो क्या होगा? तब त्रिजटा ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में कहा था, कि अयि! राम की प्रेम भक्ति की दीवानी यदि तू प्रियतम के प्यार में राम बन गई, तो श्रीराम भी तो इसी भांति प्रेम में सीता स्मरण में निमग्न होंगे। विश्व की यह अनुपम प्रेम जोड़ी सीता राम के रूप में सदा स्मरण रहेगी।

श्रीराम ने लंका विजय के उपरान्त हनुमान जी को सहर्ष सूचना देने के लिए भेजा, तो श्रीराम के प्रेम में मग्न सीता जी ने प्रियतम के सन्देश को सुन कर प्रभु का कोटि-कोटि धन्यवाद किया और श्रीराम के सभी साथियों का भी धन्यवाद किया। हनुमान ने साथ चलने की जब प्रार्थना की, तो सीता जी ने कहा—हे हनुमान! मैंने आज तक हर तरह से पति भक्ति का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन किया है। हां, रावण ने जब छल किया, तो मैं उस समय ठगी गई तथा अति विवश हो गई। इस से हमें सीता जी की वृद्धिमत्ता तथा पतिव्रत धर्म की सजगता का पता चलता है। इतने संकटों को सहते हुए भी सम्मानार्थ पति के भक्त एवं सेवक को भी यह उत्तर दिया, कि जब पतिदेव स्वयं लेनें आयेंगे, तभी जाऊंगी। अभी तो उन्हों ने विजय का ही सन्देश भेजा है।

आर्य धर्म की रक्षिका सीता जी नें आयोध्या आगमन पर तथा राज्यतिलक आदि में जो आदर्श प्रस्तुत किया। वह सर्वथा स्पष्ट है। हां, पुन वनवास जाने का और वहां लव-कुश के जन्म तथा पालन-पोषण एवं अश्वमेध यज्ञ आदि की जो कथा सर्वप्रसिद्ध है। इस में आर्य सभ्यता, संस्कृति एवं रामायण का वास्तविक भाव छिपा हुआ है। इस के लिए रामभक्त सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण तथा साधारण जनता शुद्ध रामायण या विदेहकृत रामचरित का पाठ करे।

प्रसिद्ध रामकथा वाचक श्री रामकिंकर उपाध्याय, गजानन्द आर्य और स्वामी ओम प्रेमी लिखित रामकथा सम्बन्धित रचनायें पढ़ने योग्य हैं। जिन से इस कथा के अन्य पात्रों का भी महत्त्व सामनें आता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतिवर श्री लक्ष्मण—

पूज्य पिता के सहज वाक्य पर, वारा सुधाम धरा धन को।
चली राम संग सीता भी उन के पीछे चला यति गहन वन को॥

बाल्यकाल से अन्तिम श्वास तक छाया की तरह लक्ष्मण प्राणप्रिय भाई राम के पवित्र चरणकमलों में रहे। सेवा, भक्ति आदि से भ्रातृप्रेम का विश्व में एक उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया। वनवास में लम्बे समय तक साथ रहने पर भी सीताहरण के बाद जब आभूषणों को पहचानने की बात आई, तो लक्ष्मण का यह भाव—

नाहं जानामि केयूरे, नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि, नित्यं पादाभिवन्दनात्॥

किष्किन्धा काण्ड 6, 23

कि मैं तो केवल इन में से पैरों के ही आभूषण पहचान सकता हूं। यह लक्ष्मण के उज्ज्वल चरित्र का अनूठा उदाहरण है।

यह है राम के पसीने पर अपना रक्त बहाने वाले भक्त शिरोमणि लक्ष्मण का चरित्र। जो कि हमारे लिए हर तरह से पथ प्रदर्शक है। श्रीराम का भी लक्ष्मण के प्रति भ्रातृ-स्नेह अनूठा ही था। जैसे कि युद्ध में भगवान राम ने लक्ष्मण की मूर्छा पर प्रकट किया, कि विश्व में स्त्री, सेवक, धन, स्वास्थ्य आदि पुनः मिल सकते हैं, परन्तु सहोदर भाई मिलना कठिन है—

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥

युद्धकाण्ड 101 (102) 14–15

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु भरत—

श्री लक्ष्मण ने तो राम चरणों में रह कर सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया, पर त्यागी, तपस्वी भरत ने आर्य संस्कृति, सभ्यता तथा भ्रातृप्रेम का विलक्षण उदाहरण देते हुए, वह स्वयं श्रीराम को लेने के लिए वन में गया। जब हर प्रकार की प्रार्थना करने पर भी श्रीराम तैयार नहीं हुए, तो महान त्यागी भरत ने श्रीराम की चरणपादुका प्राप्त कर सेवक रूप में राज्य कार्य चलाया। ठीक समय पर भगवान राम के न लौटने पर जीवित जल जाने की दृढ़ प्रतीज्ञा की। नन्दी गांव में पर्णकुटी बनाई और वहीं सेवकवत भूमिशय्या बना कर अन्तिम समय तक अपनी सेवा, भक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

राज तिलक को गेंद बना कर खेलन लगे खिलाड़ी।
इधर राम ने उधर भरत ने दोनों ने ठोकर मारी॥

वीर हनुमान—

इन की भक्ति, सेवा तो जगत प्रसिद्ध है। इसी लिए देश-देशान्तर में बजरंग बली के मन्दिरों की एक अपनी परम्परा है। उनमें होने वाली उनकी पूजा, अर्चना हनुमान की महत्ता का का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम सब के लिए पवन पुत्र हनुमान को निःस्वार्थ सेवा, भक्ति, प्रेम प्रत्येक प्रकार से प्रेरणादायक हैं।

जब भगवान ने राजतिलक पर सब को उपहार दिए, तो माता सीता ने अपना बहुमूल्य हार विशेष रूप से अंजलि सुत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान को कृतज्ञतापूर्वक भेंट किया। निर्मलता की साक्षात मूर्ति हनुमान ने अगाध श्रद्धा से उस को स्वीकार किया। सेवकों में शिरोमणि वीर हनुमान हार के एक-एक दाने को उलट-पुलट कर सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगे। जब अन्दर-बाहर की जांच से मणियों की अनुपम आभा और रचनाकार की अनोखी साज-सज्जा के साथ अपनी अभीष्ट भावना प्राप्त न हुई, तो हाथ जोड़ कर लौटाते हुए कहा—जिस पर प्रिय राम का अमर नाम नहीं है। वह हार मेरे किस काम का? तब साथियों ने हनुमान की भावनाओं की परीक्षा करने के लिए पूछा, यदि आप श्रीराम में ऐसे अनुरक्त हैं, तो कोई प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ।

वीरवर रामभक्त पवन पुत्र ने अपनी छाती चीर कर अपने हृदय मन्दिर में श्रीराम के आलिखित चित्र को दिखा कर सभी को चकित कर दिया। यह कथानक रूपक अलंकार है; पुनरपि हनुमान का श्रीराम के प्रति जो अनुराग, अटल विश्वास और अटूट श्रद्धा थी, उस से कौन अनभिज्ञ है?

निर्भीक अंगद—

युद्ध से पूर्व श्रीराम का दूत बनकर अंगद लंकेश के पास गया। वहां जा कर राम का सन्देश सुनाया, और स्व सुमति दी। तदनन्तर श्रीराम के बल, यश का परिचय दिया। यह सब सुन कर लंका पति ने अंगद को याद दिलाया, कि राम ने तो तेरे पिता का वध किया है और वह भी छिप कर। इस प्रकार अनेक युक्तियों से षडयन्त्र पूर्वक लोभ, भय आदि दिखा कर अंगद को राम के विरुद्ध करने के अनेक प्रयास किए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर रामभक्त अंगद ने भरी सभा में अपनी रामनिष्ठा दर्शाते हुए अपने चरित्र एवं बल का परिचय दिया।

वानर जाति के वीरों ने श्रीराम के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा, प्रेम-भक्ति का परिचय देते हुए युद्ध से पूर्व तथा युद्ध में जो कुछ किया। वह सब उनकी निष्ठा और श्रीराम की महत्ता को दर्शाता है।

आजकल इस प्रकार के व्यवहारों को हम सत्ययुग की महिमा कह कर और कलियुग के आधार पर अपने असामर्थ्य को प्रायः व्यक्त करते हैं। वस्तुतः सत्य पर चलने वालों के लिए तो सदा ही सत्य युग होता है और न कुछ करने वालों के लिए तो सदा ही कलियुग रहता है—

अपने युग को हीन समझना आत्महीनता होगी।
जिस युग में तुम हुए हो वही तो अपने लिए बड़ा है॥

इसी दृष्टि से अब कुछ इस कलियुग के रामभक्तों की जीवनी तथा निष्ठा के दर्शन कीजिए—

स्वामी श्रद्धानन्द—

स्वामी श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम मुन्शीराम था। उन का राम कथा के प्रति अनूठा अनुराग था। जिस का दर्शन हम स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित श्रीराम सम्बन्धी लेखों से कर सकते हैं। इस का एक अंश आर्य मर्यादा, जालन्धर पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ है। यही भावना उन के जीवन में समाई हुई थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब जालन्धर में वकालत करते थे। तब एक दिन उन की सुपुत्री स्कूल से लौट कर घर पर यह गीत गाने लगी—

एक वार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमय्या, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया;
अब ईसा-ईसा बोल

यह सुन कर मुन्शीराम जी के कान खड़े हो गए और सोचने लगे, यह सब ईसाई स्कूल का प्रभाव है। हमारे बच्चे इस तरह तो आर्य संस्कृति के आधारभूत भगवान राम और योगेश्वर कृष्ण से दूर चले जायेंगे। आर्यत्व के कारण उन के हृदय में एक तीव्र वेदना उभरी, कि राम की सन्तान की यह दशा।

प्रभु प्रेरणा से दृढ़ प्रतिज्ञ हो कर उन्हों ने कन्या पाठशाला प्रारम्भ करने का निश्चय किया। लाला देवराज जी के सहयोग से इस योजना को सफल किया। इस विद्यालय में दोनों ने मिल कर ऐसा यत्न किया, कि पाठ्यक्रम के साथ श्रीराम के आदर्शों का प्रचार-प्रसार हो और अपने देश की कन्यायें सीता माता के समान महान बनें।

बालकों के उत्थान के लिए गुरुकुल को प्रारम्भ किया। जो कि आज विश्वविद्यालय के रूप में प्रख्यात है। यहां के स्नातकों ने वैदिक मर्यादाओं का पालन करते हुए स्वतन्त्रता-संग्राम, साहित्य निर्माण और शिक्षा प्रसार आदि कार्यों में अपूर्व योगदान दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्शीराम जी ने महात्मा से संन्यासी पद को धारण किया। शिक्षा, वेद प्रचार के साथ स्वाधीनता संघर्ष में भी महान योगदान दिया। तभी तो दिल्ली के चान्दनी चौक में स्वामी जी नें निर्भीकता से जलूस को रोकने वालों की संगीनों के सामने अपनी छाती तान दी थी। देश के कर्मठ नेता ने तब जनता का आदर्श रूप से नेतृत्व करके देश की एकता और देश भक्ति के लिए अनेक कार्य किए। इसी लिए दिल्ली जामा मस्जिद में मुसलिम भाइयों ने स्वामी जी का भाषण कराया। जालियां वाला बाग अमृतसर में हुए अत्याचारों के विरोध में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन कराने के लिए स्वामी जी स्वागताध्यक्ष बने। इस प्रकार अनेक वर्षों तक कांग्रेस के साथ मिलकर स्वाधीनता की अलख जगाई। पर जब यह पता चला, कि मुसलिम नेता गुप्त रूप से भगवान राम के भक्तों को राम से दूर ले जा रहे हैं, तो एकदम शुद्धि आन्दोलन का शंखनाद फूंक दिया। सारा जीवन श्री राम के आदर्शों के प्रसार और रामभक्तों की वृद्धि के लिए सचेष्ट रहे।

महात्मा गान्धी—

स्वतन्त्र भारत का ऐसा कौन मानव होगा, जो श्रद्धेय गान्धी जी की अहिंसा तथा देशभक्ति से अनभिज्ञ होगा। गान्धी जी श्रीराम के परम भक्त होने से अपनी दैनिक प्रार्थना में यह गीत गाया करते थे—

रघुपति राघव राजाराम, पतितपावन सीताराम।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सब को सुमति दो भगवान॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दु मुसलिम सिख ईसाई सभी भारत मां के जाए।
सब को सुबुद्धि दो भगवान देवो आपसी मतभेद मिटा॥
गांधी का आधार यही है रघुपति राघव राजाराम।
गांधी का प्रचार यही है पतित पावन सीता राम॥

जब साथियों ने पूछा, कि आप किस राम की पूजा करते हैं, तब सत्य, अहिंसा के पुजारी ने मार्मिक शब्दों में कहा—जो सब में रम रहा है, मैं उसी की उपासना करता हूं, और जीवनयात्रा में श्री अयोध्यापति भगवान राम का महान आदर्श चरित्र सामने रखता हूं।

गान्धी जी के अन्तिम शब्द भी हे राम! ही थे।

महात्मा हंसराज—

दिव्य ज्योति के पुञ्ज, आदर्श पुत्र, वेद मर्यादा के पालक भगवान राम ने माता, पिता तथा राजा की आज्ञा से 14 वर्ष का वनवास सहर्ष स्वीकार किया और सर्वप्रिय कहलाए। राम भक्ति के कारण राष्ट्र के भविष्य के निर्माण एवं आर्य जाति के नवयुवकों को वैदिक सभ्यता, संस्कृति का पाठ पढ़ाने के लिए रामभक्त, सेवक हनुमान की भान्ति इस युग में महात्मा हंसराज अपने कार्य में सफल हुए। विश्वहित चिन्तन तथा आर्य जाति की रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में बनने वाले दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय के लिए हनुमान की तरह हंसराज ने अपना आपा वार दिया। अतः श्रीराम की सन्तान के कल्याणार्थ बिना वेतन 25 वर्ष सेवा का व्रत लिया और समस्त ऐश्वर्यों को लात मार कर निःस्वार्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा में जुटे रहे। इस प्रकार आदर्श गुरु का आदर्श शिष्य बन कर हंसराज ने गुरुभक्ति का एक उज्ज्वल प्रमाण दिया।

सन्त सेवक, साधु स्वभावी भरत की भान्ति हंसराज के बड़े भाई मूलराज ने अपने वेतन का आधा (80 का 40) जीवन निर्वाह के लिए हंसराज के परिवार को दिया और आधे वेतन में ही अपने परिवार का निर्वाह किया। यह महान तप एवं त्याग का कैसा अनूठा उदाहरण है।

महात्मा हंसराज जी की पत्नी ने भी माता सीता की तरह पति के तप-त्याग से प्रभावित होकर पति को हर मर्यादा के पालन में पूर्ण सहयोग दिया। इस प्रकार भारतीय नारी के मस्तिष्क को गौरव से गौरवान्वित किया। देश प्रेम के दिवाने दम्पती ने देश की स्वाधीनता के लिए कार्य करने वाले अपने पुत्र (बलराज) की फांसी की सजा पर श्रीराम की तरह—

न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया॥
वा. रा. 2, 19, 33

अनूठा धैर्य दर्शाया।

महाविद्यालय को उन्नति के शिखर पर पहुंचा कर प्रबन्ध-समिति के न चाहने पर भी स्व इच्छा से त्याग पत्र देकर हंसराज वेदप्रचार के कार्य में लग गए। राम-कृष्ण की सन्तान की रक्षार्थ जहां शुद्धि आन्दोलन में योगदान दिया, वहां अकाल, भूकम्प आदि में असहायों, दुखितों की हर प्रकार से सहायता का कार्य किया। जीवन भर सच्चे त्यागी, तपस्वी बन कर समाज की सेवा की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ—

धर्म रक्षक भगवान राम जब रावण आदि दुष्टों का नाश कर और 14 वर्ष के वनवास के व्रत को पूर्ण कर तथा मर्यादा के पालन से पितृ-भक्ति के उज्ज्वल उदाहरण को चरितार्थ कर अयोध्या पधारे, तो सब ने अपार हर्ष के साथ श्रीराम के स्वागतार्थ दीपमाला रचाई। इस प्रकार सभी ने हृदय से सर्वप्रिय श्रीराम का अभिवादन तथा अभिनन्दन किया।

इस पावन पर्व के एक दिन ही स्वामी रामतीर्थ का एक निर्धन परिवार में जन्म हुआ। इस रामभक्त ने अपने आदर्श राम के महान गुणों को अपना कर उन्नति पथ को प्राप्त किया। श्रीराम की तरह सहर्ष तप-त्याग के जीवन को अपनाया। देश-विदेश में आर्य सभ्यता-संस्कृति का प्रचार किया। अपने जीवन और कार्यों से राम भक्ति के वास्तविक स्वरूप को जनता के सामने रखकर राम बादशाह कहलाए। इस रामभक्त ने एक दीपावली की सायंकाल इस भौतिक शरीर का त्याग कर दिया।

श्री लालबहादुर शास्त्री—

अहिंसा के परम पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी से कौन अपरिचित है। राम और गान्धी के भक्त लालबहादुर शास्त्री ने भी एक निर्धन परिवार में जन्म लेकर अपने तप-त्याग और पुरुषार्थ से भारत के प्रधानमन्त्री पद को प्राप्त किया। और थोड़े ही समय में अपनी योग्यता की अमिट छाप छोड़ी। 1965 में पाकिस्तान के आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देकर देश की एकता,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखण्डता को सुदृढ़ किया। तदनन्तर ताशकन्द समझौते से विश्वशान्ति के दूत पद को भी चरितार्थ किया। ताशकन्द में ही राम स्मरण के साथ अन्तिम श्वास को छोड़ा।

जय जवान—जय किसान के उदघोष से शास्त्री जी ने राष्ट्रवासियों को एक सार्वकालिक, सार्वभौमिक सन्देश दिया।

रामकथा—

रामायण के मुख्य पात्र आदर्श नायक भगवान राम ही हैं। रामायण विश्व का सर्वप्रिय ग्रन्थ है। वेद, उपनिषद की तरह रामायण को भी धर्मग्रन्थ होने का सम्मान प्राप्त है। वह जहां शिक्षितों, धनाढ्यों द्वारा रुचि से पढ़ा जाता है, वहां सामान्य जनता का तो वह और भी अधिक प्रियतम ग्रन्थ है। भारतीय धर्मों और भारत के समीपवर्ती देशों में रामकथा समान रूप से मान्य है। चाहे कोई निराकार का उपासक हो या साकार का आराधक हो, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सभी के पथप्रदर्शक हैं।

भारतीय धर्म, संस्कृति, साहित्य सभी के सभी श्रीराम के चित्रण से चित्रित हैं। श्रीराम के विना भारतीयता विना नीर के मछली के समान है। अपने आदर्श चरित्र के कारण श्रीराम हम सब के हृदय मन्दिरों में रमे हुए हैं। इसी लिए ही लाखों नाम राम शब्द से युक्त हैं।

रामकथा के प्रथम गायक महर्षि वाल्मीकि हैं। जो कि श्रीराम के समकालीन थे। वाल्मीकीय रामायण के आधार पर समय-समय पर जहां संस्कृत भाषा में अनेक गद्य-पद्य ग्रन्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश में आए, वहां आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकथा प्रचलित हुई और संसार की अन्य भाषाओं में भी रामकथा अनूदित हुई। उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास रचित राम चरित मानस ने अपना विशेष स्थान बनाया है। जिस का प्रायः धार्मिक रूप में अखण्डपाठ होता है। इन सब में अनेकत्र असंगत, असम्बद्ध, चमत्कारिक चित्रण भी समय के साथ सम्मिलित होते चले गए। हां, अब रामानन्द सागर के धारावाहिक ने अपना अनोखा स्थान बनाया है।

रामकथा का प्रभाव—

महात्मा गान्धी से कुछ नें पूछा, कि आप विशेष रूप से राजनीतिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, पुनरपि रामधुन के अनुरागी और रामराज्य के स्वप्नद्रष्टा क्यों हैं ?

तब राष्ट्रपिता महात्मागान्धी नें स्पष्ट शब्दों में कहा था, कि मेरा राम सब में रमा हुआ है, अतः मैं उस का उपासक हूं। मेरे जीवन पर रामकथा का हर तरह से प्रभाव हुआ है। अतः में श्रीराम का अनन्य भक्त और अनुयायी हूं। इसीलिए रामधुन या रामनाम जाप का प्रचार-प्रसार चाहता हूं।

मुझे अयोध्यापति श्रीराम का राज्य अनेक गुणों के कारण बहुत ही प्रिय है, क्योंकि उस में सभी को न्याय और सुरक्षा प्राप्त थी। अतः मैं रामराज्य का स्वप्न लेता हूं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ प्रश्न-उत्तर—

प्रश्न :— रामायण का अर्थ क्या है ?

उत्तर :— राम+अयन, राम की गतिविधि, राम का जीवन चरित । आज की तरह उस समय भी राम का समाज में सर्वत्र यशोगान था । श्रीराम अपने आदर्श जीवन के कारण, प्रत्येक पहलू से उच्च जीवन से युक्त थे । अपने यशस्वी जीवन, महत्त्व, मान, मर्यादा के कारण हर तरह से इस कथा के आधार थे । हां, आज के नेताओं की तरह दुहरा जीवन नहीं जीते थे ।

प्रश्न :— क्या धोबी के कहने पर सीता को पुनः वनवास भेजा गया था ?

उत्तर :— यह बात नहीं । वस्तुतः राजतिलक के समय विना किसी और से परामर्श किए, श्रीराम ने त्यागी, तपस्वी भरत को अपना राजकुमार एवं उत्तराधिकारी घोषित किया था । श्रीराम ने अपने मन में सोचा, कि कहीं राजमहलों में रहते हुए मेरे बेटों में राज्यप्राप्ति की लालसा न उभरे, पितृ-अधिकार के कारण कल को कहीं वे राम की मर्यादा को भुला न दें । अतः श्रीराम ने गर्भवती सीता को यथासमय पुनः वनवास भेजा, जिस से उन की सन्तान पूर्ण तपस्वी, वैरागी, त्यागी हो । इसीलिए सन्तान को विशेष संस्कारयुक्त बनाने के लिए ही महर्षि वाल्मीकि के आश्रम का सीता जी ने आश्रय लिया था ।

प्रश्न :— क्या कुश की उत्पत्ति कुशा से हुई थी ?

उत्तर :— लव-कुश वस्तुतः जुड़वां भाई थे । आज भी तो जुड़वां सन्तानें होती हैं । हो सकता है, यह बात प्रारम्भ में किसी दृष्टि से लाक्षणिक हो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न :— क्या रामभक्त हनुमान बन्दर थे ?

उत्तर :— मेरी दृष्टि से हर विचारशील को शान्त–एकान्त स्थिति में स्थिरचित्त हो कर स्वयं यह विचारना चाहिए, कि निष्काम सेवक हनुमान ने जो महान कार्य साधे हैं, वे क्या कोई बन्दर कर सकता है। विचारने पर आप को स्वयं ही इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।

प्रश्न :— मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का स्वर्गवास कैसे हुआ ?

उत्तर :— आज तक किसी भी भाषा के रामकथा के लेखक ने या किसी अनुसन्धानकर्ता ने इस विषय पर लेखनी नहीं उठाई। पुनरपि मैं अल्पबुद्धि इस प्रसंग में अनधिकार चेष्टा करने लगा हूं।

भगवान राम ने अश्वमेधयाग के बाद भरत को राज्य सौंपना चाहा, परन्तु त्यागी भरत ने कहा—आप के सुयोग्य उत्तराधिकारी जब विद्यमान हैं, तब आप मुझे अपने से दूर क्यों करना चाहते हैं ? मैं तो आप के संग ही साधना करूंगा। अतः लव–कुश को राज्य का भार सौंप कर राम, सीता, लक्ष्मण, भरत आदि साधनार्थ वनों में चले गए। जैसे कि पाण्डवों के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है, ऐसी ही स्थिति राम आदि की भी रही।

अन्त में इस प्रसंग को इस पद्य के साथ समाप्त करता हूं, क्योंकि प्रश्न-उत्तर का कोई अन्त नहीं—

राम गयो, रावण गयो, जाको बहु परिवार।
नानक थिर कुछ है नहीं, सपने ज्यों संसार॥
राम भरोसे बैठ के, रहो खाट पर सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होए सो होए॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम महिमा --

पाठकगण! आप स्वयं ही विचार कीजिए, कि आज तक संसार में न जाने कितने व्यक्ति आए और चले गए। पर श्रीराम जैसी सर्वप्रियता किसी को भी प्राप्त नहीं हुई। इस का मूलकारण श्रीराम का आदर्श जीवन ही था। श्रीराम ने वेद की मर्यादा के अनुसार अपने सारे जीवन को व्यतीत किया। तभी तो वे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहलाए। एक राजकुमार होते हुए भी तप-त्यागमय जीवन बिताया। भगवती सीता ने हर स्थिति में श्रीराम का साथ निभाया। लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि श्रीराम के सहायक बने।

'श्रीराम महिमाशाली, थे वीर पुरुष शक्तिशाली।
हे दिव्यरूप, शोभित ललाम, श्रीराम तुम्हें शत-शत प्रणाम।
जर-जर जाति के जीवन में चैतन्य नया लाने वाले।
युगों से मुरझाये प्रांगण में, नव सुषमा सरसाने वाले॥
श्रीराम! धरा के हार तुम्हीं, दीनों को अपनाने वाले।
है कौन तुम्हारे यूं समान, श्रीराम! तुम्हें शत-शत प्रणाम॥
उर-उर के विश्वास तुम्हीं हो, तुम दूर नहीं पास तुम्हीं हो।
छोटा क्या बड़ा नहीं कोए, तुम सब का साथ निभाते हो॥
ले धर्म ध्वजा निज हाथों में, चिर-पाप विपत्ति मिटाते हो।
तव यश सौरभ को पाकर ही, कण-कण हो उठता दीप्तिमान॥
मेरे राम हैं पतित पावन, पतितों को राह दिखलाते हो।
वानर समाज को सुसज्जित कर, असुरों का गर्व मिटाते हो॥
संकीर्ण भावना को त्यागो, वसुधा कुटुम्ब सदृश जानो।
है धर्म और कर्तव्य बड़ा, मन में बस ऐसा ही ठानो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश यही, आदेश यही, युग-युग में करते हो विधान।
हे दिव्य रूप शोभित ललाम, हे राम ! तुम्हें शत-शत प्रणाम ॥'
—सत्यभूषण वेदालंकार कृत

सीता चरित—

विश्व नारियों को जब, सीता के चरित्र का ध्यान होगा।
आत्मिक शक्ति के वर्धन से, तभी उन का उत्थान होगा॥
आ पड़ेगा घोर दुख तो भी, प्रिय कान्त का साथ देगी।
निरन्तर अवहेलना पाकर भी, सदा पद माथ (साथ) देगी॥
वैभवशाली बलीवद्ध भी, न निज सतीत्वहीन होगी।
होगी काल के कराल गाल में, पर तनिक भी न दीन होगी॥
साक्षात यमरूप होगी, धर्म-देशद्रोही पापियों को।
नाश करके छोड़ेगी, सकल दुष्टों व पापियों को॥
जनेगी पुत्र भाग्यशाली, विपक्षी के अभिमान भंजक।
जगदीश के भक्त प्यारे; शक्तिसम्पन्न व लोकरंजक॥
तभी देश का उद्धार होगा, सकल जग में मान होगा।
सभ्य देशों में प्रथम 'तन्मय' गुरु भारत का स्थान होगा॥
(रचनाकार रणजीत मुनि 'तन्मय')

जनकदुलारी की पति-निष्ठा—

श्रीराम वन जाने को जब तैयार हुए।
सीता ने सर कदमों पर रख, के यूं वचन कहे॥
आज्ञा से अपने बाप की; जो आप वन चले।
सेवा पति का हुक्म था, मां बाप का मुझे॥
मात पिता के हुक्म से, मुंह कैसे मोड़ लूं ?
पतिव्रत धर्म अपना, भला कैसे छोड़ दूं॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम—

राम के पदकमल में दृढ़भक्ति उन की थी अहो।
सौमित्र सा है भ्रातृप्रेमी अब कहां वाचक कहो॥

अत एव बिन प्रभु के उन्हें रहना दुष्वार था।
इस विरह सहने के लिए, वह वीर कब तैयार था॥

भगवान करुणासिन्धु प्रभु व्याकुल हुए बड़े मन में।
फिर सान्त्वना निज बन्धु को अवधेशमणि देने लगे॥

राम उवाच—

(पं. रामनारायण शुक्ल)

कोमल नयन से शान्त कर, रघुनाथ यूं कहने लगे।
हे प्राणप्रिय! इस भान्ति से कातर न होना चाहिए॥

कुछ देख-सुन काल की गति लाल! चलना चाहिए।
सोचो जरा, मन में विचारो, प्रियवर! तुम्हें करना क्या चाहिए॥

ले चलूं, यदि आज तुम को तात अपने साथ में।
तो सौंप जाऊं मैं प्रजा को बन्धु! किसके हाथ में॥

हे बन्धु! माता और पिता व्याकुल यहां हैं क्लेश में।
ऐसे समय जाना उचित क्या छोड़ उन को देश में॥

लक्ष्मण उवाच—

उत्तर दिया सौमित्र ने तब राम को कर जोड़ कर:
सुनिए कृपा करके विनय इस दास की हे भ्रातृवर॥

प्रभु आप के अतिरिक्त मैं हूं अन्य कुछ मैं नहीं जानता।
हैं आप ही सर्वस्व मेरे, मैं और कुछ नहीं मानता॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान त्यागी उर्मिला—

भगवान राम-सीता-लक्ष्मण के अनन्य भक्तों तथा इतिहास-कारों ने उर्मिला के साथ कितना घोर अन्याय किया है तथा अब भी किया जा रहा है। इस को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

उर्मिला जी सीता जी की भान्ति अपने प्राणप्रिय लक्ष्मण के संग वन को जाने के लिए कटिबद्ध थीं। जहां पति की आज्ञा ने उस के हठ को ढीला किया, वहां यति लक्ष्मण की युक्ति ने 'सोने पर सुहागे' का कार्य किया। उर्मिला को समझाते हुए लक्ष्मण ने कहा—देख उर्मिला! राम संग सीता तो अनुमति लेकर पहले ही तैयार है और मैं भी, यदि तू भी संग चल दी; तो शोकग्रस्त पूज्य पिता और मां कौशल्या तथा सुमित्रा की सेवा कौन करेगा? हां, माता कैकेयी की मनःस्थिति किस से छिपी हुई है?

प्राणप्रिये! अतः तू सामान्य नारी हठ को छोड़ कर पति आज्ञा को मानते हुए यहीं रह और माता कौशल्या, सुमित्रा तथा पिता जी की सेवा में ही अपने आप को अर्पित कर दे।

उर्मिला ने पतिदेव के वचनों को शिरोधार्य कर राजमहलों में ही वनवासी जीवन जीते हुए अगाध श्रद्धा, निष्ठा से सेवाव्रत को निभाया। वस्तुतः यति लक्ष्मण के पारिवारिक जीवन को बनाने के लिए उर्मिला ने अमर बलिदान दिया। कवि का यह भाव यहीं ही चरितार्थ होता है, कि—

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।
कि दाना खाक में मिल कर, गुले गुलजार होता है॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान त्यागी भरत—

भरत के दिव्य गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। तभी तो कहा है—

राज-पाट की गेंद बना कर खेलन लगे खिलाड़ी।
इधर भरत, उधर राम, दोनों ने ठोकर मारी॥
चरण पादुका धरी शीश पर, यही बात विचारी।
साधु बन कर रहा भरत, नहीं बना राज्य अधिकारी॥

भगवान राम ने वनवास के पश्चात राजतिलक पर पुनः भरत को उत्तराधिकारी बनाया, पर भरत ने फिर भी लव-कुश को ही राज्य दिलाकर ही दम लिया।

महावीर हनुमान—

हनुमान के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की चमत्कारी बातें प्रसिद्ध हैं। जैसे कि मच्छली को गर्भधारण कराना, सूर्य को निगलना, सारे का सारा पहाड़ हथेली पर उठा लाना, बन्दर होने से अपनी पूंछ को छोटा-बड़ा कर लेना, राजतिलक पर माता सीता द्वारा दिए हार के मोतियों को बन्दर की तरह तोड़-तोड़ कर फेंकना और उनमें रामनाम ढूंढना। वस्तुतः ये सब साहित्यिक वचन हैं, अतः इन को अभिधा के रूप में न लेकर लक्षणा के रूप में लेना चाहिए।

वीरवर हनुमान की प्रशंसा करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, कि भगवान राम को वीर हनुमान जैसा निष्काम सेवक मिला। काश! देव दयानन्द को भी ऐसा कोई निष्काम सेवक मिल जाता, तो इतिहास कुछ और ही होता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण और हम—

आज सर्वत्र राममन्दिरों, रामायण के अखण्ड पाठों, अनुष्ठानों और रामनाम की धुनों की ध्वजा लहरा रही है। पर अधिकतर माता-पिता अपने बेटों से दुःखी हैं। एक विधवा मां जैसे-कैसे अपने बच्चों को योग्य बना देती है, पर अनेक बेटे धन-सम्पन्न होते हुए भी माता-पिता को सम्भालने में प्राय: असमर्थ मिलते हैं। ऐसी स्थिति को देखकर वे यह कहने के लिए विवश हो जाते हैं, कि—

आज अपने आप में क्यों खो गया है आदमी।
कैसे कहूं आज मैं यह राम-कृष्ण का अनुयायी है आदमी॥
इन्सान बनना था इसे कब कैसे शैतान बन गया यह आदमी।
तन से दिखता है आदमी, पर मन से क्यों न बना यह आदमी॥
आज हम क्यों बन रहे हैं, हिन्दू-सिख-ईसाई के से आदमी।
मानवता से दूर क्यों भाग रहा है, कलयुग का यही आदमी॥
नाम ले ईसा, मुहम्मद, नानक का,
स्वयं जीवों को खाये यह आदमी।
ईश्वर का भक्त बन कर भी छल-कपट,
चोरी जारी करे लिखा-पढ़ा यह आदमी॥
धर्म का ठेकेदार बन कर,
स्वयं अधर्म क्यों फैला रहा यही आदमी।
मानव का धर्म है मानवता,
फिर क्यों दानवता फैला रहा यही आदमी॥
सत्य, सेवा, प्रेम पर चले तो सच्चा कहायेगा यही आदमी।
इन सब पथिकों के दिलों में क्या है, कोई भी न जान पायेगा कभी,
पशुओं से बदतर काम करके, ईश्वर भक्त कहाये अपने को आदमी॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांग, गांजा, सुलफा, हीरोइन आदि पीकर,

राम या शिव का भक्त बने यही आदमी।

ऊपर से बना है आदमी,

मन से काम करे आतंकवाद के से यही आदमी।

'पथिक' मानव योनि पा कर भी

फिर कब सच्चा मानव कहाएगा यह आदमी ॥

जय-जयकार—

भगवान राम, कृष्ण, दयानन्द और गान्धी की जय तो सुनिश्चित है, पर मेरी-आप की जय (=अमर कीर्ति) कब होगी ?

झण्डे दुनिया में उन के गढ़े हैं।
शीश जिन के धर्म पर चढ़े हैं॥

आत्मबन्धुओ ! विचारिए, चाहे मैं और आप भगवान राम या कृष्ण की जय-जयकार करें या न करें। इन के नाम की माला फेरें या न फेरें, इन में कोई अन्तर न आएगा, क्योंकि इनकी कीर्ति उन्हीं के आदर्श कार्यों से सर्वत्र फैल चुकी है। तभी तो रामनवमी या कृष्ण-जन्माष्टमी आते ही सभी की उस ओर स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।

इस प्रभाव का कारण स्पष्ट है, कि ये महापुरुष अपने लिए नहीं जिए, अपितु औरों के लिए जिए। जीवन के भोगों को त्यागभाव से भोगा।

आप और मैं यदि अब भी ऐसा जीवन जीने का दृढसंकल्प कर लें, तो हमारा भविष्य भी बदल सकता है। क्या राम, कृष्ण, दयानन्द, गान्धी पर संकट के बादल नहीं आए ? क्या समाज द्वारा उन का अपमान नहीं हुआ ? पर वे हर परीक्षा में 100% पास हुए। बाल हकीकत ने क्या आत्मा की अमरता का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पाठ किसी विशेष विद्यालय में पढ़ा था ? जो हम नहीं जानते। वह बालक जानता और मानता भी था, पर हम केवल जानते ही हैं, पर मानते कम ही हैं।

पढ़ो, समझो बनो महान, क्योंकि आप हैं महान। कुछ करोगे, तो कुछ बनोगे एतदर्थं गीताप्रेस गोरखपुर की 'पढ़ो-समझो, करो' पुस्तक पढ़ो तथा आर्य विद्वानों की रचनायें पढ़ो। हां, केवल पढ़ने से ही कार्य न चलेगा, पढ़ने के साथ तदनुरूप आचरण की भी अपेक्षा है।

यदि आप की बेटी, बेटा या पत्नी आप के स्थान पर भोजन करे, तो उन्हीं की उस से तृप्ति होगी, आप की नहीं। ऐसे ही जो जय के कार्य करेंगे, उन्हीं की ही जय-जयकार होगी, दूसरों की नहीं। यह एक सचाई है, कि दूसरों के खाने से आप का पेट कभी भी नहीं भरेगा। ऐसे ही दूसरों की जय-जयकार से आप की जय-जयकार नहीं होगी। अपनी जय-जयकार के लिए उसको ऐसे कार्य अवश्य ही करने होंगे, जिससे उसकी जय-जयकार हो। प्रत्येक धर्म यही सिखाता है, कि धर्म=अच्छाई के कर्म करने से ही किसी की जय-जयकार होती है। अतएव कहा है—

क्या करेगा प्यार वह भगवान से, कर न पाया प्यार जो ईमान से।
जन्म लेकर गोद में इन्सान की, कर न पाया प्यार जो इन्सान से॥

मेरे विचार से मानव कृत मूर्तियों की अपेक्षा ईश्वर कृत प्राणियों की पूजा, भक्ति, सेवा ही भगवान की सर्वश्रेष्ठ साधना है।

जब हम सब का यह विश्वास है, कि अच्छे कर्मों का ही अच्छा फल होता है। तब अपने विश्वास को चरितार्थ करने के लिए हमें अच्छे कर्म ही करने चाहियें और तभी हमारी जय-जयकार होगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्काम सेवा वैदिक ट्रस्ट

इस का मुख्य उद्देश्य है—

" सर्वे भवन्तु सुखिनः "

अतः मानव-मानव को शुद्ध, सक्षम, समृद्ध बनाना और इस के लिए ज्ञान – सेवा – साधना के त्रिक को अपनाना।

(अ) ज्ञान की दृष्टि से—

1. सत्य साहित्य का प्रकाशन तथा प्रचार।
2. युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए गोष्ठियों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन।
3. योग्य निर्धन विद्यार्थियों की हर तरह से सहायता करना।

(आ) सेवा की दृष्टि से—

1. निर्धन, असहाय की जरूरत के अनुसार सहायता तथा यथायोग्य स्थान पर पहुंचाने में योगदान देना।
2. वृद्ध, रोगियों की सेवा करना।
3. सर्दियों में गर्म वस्त्रों का वितरण।
4. आश्रम पर आने वाले का यथायोग्य सत्कार।
5. दुर्घटनाग्रस्त को सहायता करना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इ) "साधना" की दृष्टि से—

1. योगसाधना शिविर और प्राकृतिक चिकित्सा की व्यवस्था करना।
2. प्रतिवर्ष वसन्त पञ्चमी, होली, दीपावली पर यज्ञ, भण्डारे आदि कार्यक्रम का आयोजन।
3. निकट के ग्रामों में समय-समय पर यज्ञ-कथा द्वारा प्रचार करना।

हां, आश्रम की आय का कोई निश्चित आधार नहीं है, केवल आप सब से प्राप्त होने वाला मासिक, वार्षिक चन्दा/दान ही सहारा है। अतः ट्रस्ट के आजीवन सदस्य, संरक्षक बन कर धन द्वारा इस सेवा कार्य में सहयोगी बनें। और यहां से प्रकाशित साहित्य को खरीद कर स्वयं पढ़ें और दूसरों में बांटें।

हां, आप अपने नाम से या अपनों की स्मृति में ट्रस्ट के माध्यम से साहित्य प्रकाशित कराकर इस के सहयोगी बन सकते हैं। ट्रस्ट के पास कई पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार हैं। जैसे कि— -

जीवनदर्शन, अमृतदर्शन, ब्रह्मदर्शन,
सुखी कैसे रहें?, सरल-सुखी जीवन

अतः आप के सहयोग की प्रतीक्षा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसंधान ... तिथि ... पुस्तक ...

सुमित्रा प्रकाशन का प्रथम पुष्प

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः प्रत्येक का अपने जीवन में अनेकों से सम्बन्ध एवं मेल होता है। भुलाने का भरसक प्रयास करने पर भी कुछ की यादें भूलती नहीं। विशेषतः माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी-बच्चे और घनिष्ठ मित्रों की। वे यादें मधुर हों या कड़वी, पर हर एक के जीवन में अपना अमिट प्रभाव रखती हैं—

वह जीवन भी क्या जीवन है, जिसमें किसी की याद न हो।
वह मानव भी क्या मानव है, जिस में मानवता का वास न हो॥

जीवन-मृत्यु, संयोग-वियोग प्राकृतिक नियम हैं, परन्तु जब कभी अज्ञानता से या निष्ठुर समाज की कुरीतियों के कारण दो दिल न चाहते हुए भी बिछुड़ने के लिए मजबूर हो जायें, तो दोनों दिलों से आह निकलती है। विशेषतः पूर्व की यादों में वा अकेलेपन में।

गोस्वामी तुलसीदास, सन्त तुकाराम, यूनान के मनीषी सुकरात को जीवनसाथी के व्यवहार से सुमार्ग मिला था। मुझे भी सुमित्रादेवी के 12 वर्ष के सान्निध्य से सेवाकार्यों में लगने की प्रेरणा मिली। अतः उस देवी का अनेकशः धन्यवाद है, हां, इस रूप में मैं उस को गुरु भी मानता हूं। अब मैं अन्तिम सांस तक उस का आभारी रहूंगा। जब कि मैंने तब अपने अधूरे ज्ञान के कारण उस की अनेक उचित इच्छाओं को ठुकराया, क्योंकि तब मुझे अपने कर्तव्य का पूर्ण ज्ञान न था। कभी-कभी बुराई से भी अच्छाई और अच्छाई से भी बुराई मिलती है, यही जग की रीत है।

हां, कृतज्ञता के रूप में यह एक प्रयास है।

—राम 'पथिक'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ निष्काम सेवा वैदिक

1. श्रीराम भक्ति
2. वैदिक ईश्वर उपासना
3. देव दयानन्द
4. श्रुति सुधा प्रार्थना
5. सन्ध्या, हवनमन्त्र तथा भजन
6. सिग्रेट कहानी, हस्पताल जबानी —पथिक
7. ईश्वर दर्शन के सरल उपाय —पथिक
8. वेद-उद्धारक महर्षि दयानन्द
9. सफल जीवन —प्रा भद्रसेन
10. उत्तम खेती —प्रा. भद्रसेन
11. पति-पत्नी की कहानी (करवा चौथ) —प्रा. भद्रसेन

अन्य प्राप्य ग्रन्थ—

1. आर्य समाज के नियमों का एक अनुशीलन —प्रा. भद्रसेन
2. वियोग वेदना —प्रा. भद्रसेन

आगामी रचना—

1. नारी जीवन (महर्षि दयानन्द की दृष्टि से) —प्रा. भद्रसेन
2. ऋतुराज ऋषि दयानन्द —प्रा. भद्रसेन

आलेख प्रिंटर्ज़ (कालिया बिल्डिंग), शिमला हिल्ज़ रोड, होशयारपुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.